Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017 RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 14 अंक 03 30 मार्च 2015 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

आधुनिक चाणक्य ताऊ देवी लाल

(25 सितम्बर, 1914 से 6अप्रैल 2001 तक)

६ अप्रैल पुण्य तिथि पर विशेष

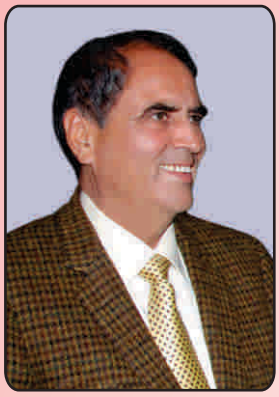

आज से 2 हजार वर्ष पूर्व शासन और राजनीति के स्वर्णिम युग कहलाने वाले मगध राज्य की सत्ता के सलाहकार चाणक्य द्वारा दी गई आर्थिक नीति और राजनीति में निर्धारित मापदंड आज भी सराहनीय एवं अनुकरणीय हैं। वे राजा के महल के बगल में एक झोंपड़ी में रहे और अपना जीवन यापन लेखन इत्यादि से किया। वे वास्तव में एक साधु होते हुए तप और त्याग की मूर्ती बने रहे। उनके परामर्श को शिरोधारी कर महाराजा ने स्वीकार किया और जन कल्याण में कार्यरत रहे। आज सत्ता के गलियारों में योगी, संतों, महंतो और साधुवेश वालों का तांता लगा हुआ है और राजनेता उनकी शरण में उनके चेलों को वोट बैंक मानकर चक्र लगाते देखे जा सकते हैं लेकिन ताऊ देवीलाल एक वाहद सत्ताधारी रहे जो शक्तिमान होते हुए भी वास्तविकता में साधु रहे और जिनका जीवन सरल सादा और लोकहित का रहा जिसके अनेकों उदाहरण हैं जैसा कि 'शासन आपके द्वार' में अधिकारी ग्रामीण क्षेत्र में कैंप लगाकर बैठते और जनता की समस्याओं का मौके पर ही निदान करते। दूसरा -'लोक राज लोक लाज से चलता है' को बखूबी निभाया। वे सत्ता में रहे या सत्ता से बाहर सदा कर्मठ यौद्धा की तरह चलते रहे और गरीब, मजलूम, काश्तकार के हित के लिए संघर्षरत रहे।

आज प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' का नारा दिया है जिसका श्रीगणेश चौ0 देवीलाल सन 1977 में ही कर चुके थे। कन्या शिक्षा के वे सदा पक्षधर रहे। कन्याओं को निशुल्क शिक्षा, वर्दी तथा कापी किताब निशुल्क उन्ही की ही देन है। जच्चा-बच्चा स्वास्थ्य योजना में गोद देने की प्रथा के साथ-साथ 'कन्या दान' उन्ही की देन रही। उनकी कथनी और करनी में कोई फर्क नहीं था बल्कि उनकी सोच अनुठी थी। वे सत्ता को जनता सेवा का माध्यम मानते थे। मुख्य मंत्री निवास में रहते हुए 'हुक्का घर' की स्थापना वही सोच सकते थे। शाम को या जब भी समय मिलता वे बैठे आगंतुकों के बीच विराजमान हो जाते, वहीं सबके साथ मिल बैठ बतलाते और वहीं खाना-पीना भी हो जाता। देश के उप प्रधान मंत्री व कृषि मंत्री होते हुए उन्होंने पाँच सितारा होटलों में चौपाल कि व्यवस्था करवाई जहां पर किसान को उचित दाम पर भोजन उपलब्ध हो सके और स्वयं अपने निवास स्थान पर एक आर्दश पशुपालन तथा गोबर गैस स्थापि करके ग्रामीण भारत को इस दिशा में प्रोत्साहन देने का कार्य किया। दरिद्र नारायण के वे उपासक थे। कहीं भी किसी के घर पहुंच जाना, हाल-चाल जानना यह उनकी जीवन शैली थी। ऐसे व्यक्ति को सत्ता में रहते हुए भी किसी ऋषि की उपाधी दी जा सकती है लेकिन वे स्वयं एक जागीदार परिवार से होते हुए भी एक साधारण किसान मजदूर की तरह सोचते और आचरण करते थे। इसीलिए वे जगत 'ताऊ' बन गए। वे महात्मा गांधी के आह्वान पर स्वतंत्रता संग्राम में कूद गए। शिक्षा की प्रवाह ना की। गांधी जी की तर्ज पर उनकी भी यह सोच थी कि इस देश में असली साम्राज्य उस समय स्थापित होगा जब देश की सत्ता की बागडोर एक कामगार व किसान के हाथ में होगी और देश के राष्ट्रपति की कुर्सी पर दलित व प्रधानमंत्री के पद पर किसान व कामगार आसीन करके ही महात्मा गांधी का सपना पूरा हो सकता है। इसी स्वप्न को पूरा करने के लिए उन्होने स्व0 चौधरी चरण सिंह, श्री एच डी देवगोड़ा, स्व0 श्री वी पी सिंह व श्री चंद्रशेखर को प्रधानमंत्री के पद पर विराजमान करवाया।

चौ0 देवीलाल ने सदैव बिना किसी भेदभाव के समाज के सभी वर्गों विशेषकर दलित व गरीब वर्ग को अग्रिम पंक्ति में रखकर निष्पक्ष राजनीति की। सन 1986-87 में स्वंय उन्होने दलित वर्ग से संबंधित एक आई ए एस (सेवा निवृत) अधिकारी डा0 कृपा राम पुनिया को राजनीति में प्रवेश करने के लिए प्रेरित किया और प्रथम बार उनको विधायक बनाकर हरियाणा में सबसे प्रभावशाली कैबिनेट मंत्री बनवाया और बातचीत में कहते थे कि एक दिन डा0 पुनिया को देश का राष्ट्रपति बनाकर अपना संकल्प पूरा करेगें। उन्होने हमेशा मजदूर व किसान वर्ग की आवाज को बुलंद किया और कहते थे कि राजनैतिक

शेष पेज–2 पर

'k"k i!t&1

ताकत हासिल करके ही किसान-मजदूर का जीवन सुधारा जा सकता है।

जननायक का समस्त जीवन एक निरंतर अथाह संघर्ष और त्याग की गाथा है जिन्होने स्वंय हजारों एकड़ भूमि के मालिक होते हुए भी जमींदारी प्रथा का डटकर विरोध किया और सर्व प्रथम अपनी कृषि भूमि खुशी से मुजारों के हवाले करके हजारों गरीब मजदूरों व मुजारों को भूमि पर मालिकाना हक दिलवाया। उन्होने छोटे काश्तकारों को उनका अधिकार दिलाने के लिए पंजाब विधानसभा में पट्टेधारी अधिनियम 1953 बनवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस कानून के बन जाने से मुजारों की बेदखली को रोका गया। जो मुजारे 6 साल से भूमि काश्त कर रहे थे उनको अदालत के माध्यम से आसान किस्तों पर जमीन खरीदने का हक दिलाया गया। इस कानून से छोटे व कमजोर काश्तकारों को सर्वाधिक लाभ हुआ। वे सदैव किसानों, मजदूरों व समाज के कमजोर वर्गों के हितों व उत्थान के लिए संघर्षशील रहे और हमेशा कहते थे :-

गरीब को न सताना, वह रो देगा,
सुनेगा उसकी परमात्मा, जड़ मूल से खो देगा।

स्वामी विनोबा भावे के भू-दान आंदोलन में उन्होने सक्रिय भूमिका निभाई और अपनी पुस्तैनी जमीन देकर एक उदाहरण कायम किया। बाढ़ की स्थिति में ग्रामीण रिंग बांध योजना अपनी सिर पर तसला उठाकर शुरु की। किसान के हर खेत को पानी देने के नजरीये से पक्के खालों की व्यवस्था सरकारी खर्चे पर करवाई और 'पानी का प्रबंध, भ्रष्टाचार बंद' का नारा लगाया और काफी हद तक सफलता भी हासिल की लेकिन आज वही भ्रष्टाचार समाज में कोढ़ की तरह व्याप्त है। किसान की फसल को उचित दाम दिलाने हेतू उन्होने अथक प्रयास किए और केंद्र सरकार को जिंस की कम से कम कीमत निर्धारित करने के लिए बाध्य किया तथा गेहुं और धान की सरकारी खरीद हेतू कारागर कदम उठाए। सड़कों के आस पास सरकारी भूमि पर लगे वृक्षों से किसान को होने वाले नुकसान की भरपाई हेतू उन वृक्षों की आमदनी में से किसानों का हिस्सा निर्धारण करवाया। कुदरती कहर के वक्त फयल नुकसान की भरपाई के लिए प्रयास किए। वर्ष 1977 में ओलावृष्टि से खराब हुई फसलों को मुआवजा सबसे पहले उन्होने ही दिलाया था। सरसों की फसल की देरी से बुआई के कारण सरकारी ट्रैक्टर चलवाकर सरसों की बुआई की। ट्रैक्टर को पंजीक्रण शुल्क मुक्त किया और कहा कि ट्रैक्टर तो किसान की गाडी है। पांच सितारा होटलों में 'बैठक' की स्थापना करवाई। किसानों के 3200 करोड़ रूपये के ऋण माफ करवाए। वृद्धावस्था सम्मान पैंशन उन्ही की देन है। किसान-कामगार के हितों के लिए सदैव सजग रहते थे एक बार आलू की कीमत गिरने पर उन्होने 'ईरान' से सौदा किया और ईरान से बड़े-बड़े ट्रक सीधे किसान के खेत तक पहुंचाया। दीनबंधु सर छोटूराम के बाद वे केवल देश के एक ऐसे नेता रहे हैं जिन्होने देश के कोने-कोने में मजदूरों व किसानों में न केवल राजनैतिक चेतना पैदा की बल्कि 1977 से लेकर अंतिम यात्रा तक गठजोड़ की राजनीति की शतरंजी चाल से गठित कांग्रेस के एकछत्र राज को तोड़ते रहे और राष्ट्र के कई प्रांतों - उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश आदि में सन 1977 में जनता सरकार स्थापित करके किसान व मजदूर पुत्रों को मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बिठाया व ग्रामीण तथा काश्तकारी पृष्ठभूमि के कई नेताओं को प्रधानमंत्री की कुर्सी हासिल करवाई।

चौ0 देवीलाल ने अपने शासनकाल में सबसे पहले गरीब-मजदुरों, छोटे दुकानदारों व काश्तकारों के व्यवसायिक व कृषि ऋण माफ करके समाज के सभी वर्गों को राहत पहुंचाने का कार्यक्रम शुरू किया। इसके अतिरिक्त उन्होने काश्तकारों व छोटे दुकानदारों को बैंकों से सस्ते ब्याज पर ऋण उपलब्ध करवाने व कृषि के लिए बिजली, पानी, उत्तम बीजों, उर्वरकों को प्रचुर मात्रा में उपलब्ध करवाने तथा प्राकृतिक प्रकोपों से फसल नष्ट होने पर किसानों व काश्तकारों को उचित मुआवजा दिलवाने की व्यवस्था करके कृषि व इससे संबंधित कार्यों पर आधारित लगभग 80 प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या के जीवन स्तर को सुधारने का प्रयास किया। छः एकड़ भूमि वाले किसानों का मालिकाना (भू-राजस्व) माफ किया। इसके इलावा जन नायक ने अपने शासनकाल तथा केंद्रीय कृषि मंत्री होते हुए किसान व कृषि मजदूरों के हित के लिए अनेकों लाभकारी योजनाएं निरंतर रूप से लागू करने के लिए केंद्रीय सरकार पर दबाव बनाए रखा।

धोखाधड़ी व मौकापरस्त राजनीति से वे सदा नफरत करते थे। जब उनका कोई साथी उन्हे छोड़कर जाता तो वे कहते थे मैं और मजबूत हो गया और ऐसा हुआ भी। चौधरी भजनलाल ने उनकी कुर्सी छीनकर सत्ता पर कब्जा किया तथा जनता दल को गठित करने वाले चौधरी देवीलाल से दगा किया। जनता दल की सरकार बना ली और केंद्र में दगाबाजी से सत्ता में वापसी पर कांग्रेस का दामन थाम सरकार का बैनर बदलकर 'अलीबाबा और चालीस चोर' कहलाए क्योंकि जनता दल के 40 विधायकों को लेकर ही वे कांग्रेस के बैनर तले आए थे। जनता दल को संगठित करने में अह्म भूमिका निभाने के एवज में चौ0 देवीलाल को प्रधानमंत्री बनने की पेशकश मिली उन्होने स्वंय प्रधानमंत्री बनने की बजाए सहर्ष श्री वी0पी0सिंह और बाद में श्री चंद्रशेखर के सिर पर प्रधानमंत्री का ताज रख दिया। ऐसे त्यागी थे चौधरी देवीलाल। उन पर मुंशी प्रेमचंद की लिखी पंक्तियां -''बहुत शौक से सुन रहा था जमाना, तुम्ही सो गए दास्तां कहते-

कहते।'' आज भी ग्रामीण परिवेश में बड़े-बूढ़े उन्हे भगवान की तरह पूजते हैं। गांवों के विकास के लिए ग्रामीणों के नीजि प्रयासों द्वारा एकत्रित धनराशी पर सरकारी खजाने से दो या तीन गुणा अनुदान दिलाकर लगातार मैचिंग ग्रांट योजना शुरू करने व राज्य कोष से जारी धनराशी को सीधे पंचायत व ब्लाक स्तर पर खर्च करने के प्रावधान किए ताकि सरकारी कोष का सदुपयोग हो सके। अतः वे समस्त देश में जन-कल्याण की तमाम योजनाओं के सूत्रधार रहे।

पुलिस प्रशासन को चुस्त-दुरूस्त करने हेतू पुलिस कर्मियों के लिए उन्हे समयबद्ध तरक्की देना, पूरे राज्य में खेलों को बढ़ावा देने के साथ-साथ पुलिस विभाग के खिलाड़ियों को भी खेल जगत में अव्वल प्रदर्शन करने पर विशेष तरक्की देना व इन्सपैक्टर के पद तक खिलाड़ी कोटे से 3 प्रतिशत विशेष भर्ती करने का प्रावधान आदि अनेकों कल्याणकारी योजनाओ व पुलिस विभाग में समय बध पदौन्नती की शुरआत की ।

आज ताऊ देवीलाल की नीतियों व सिद्धांतों का अनुशरण किए जाने की नितांत आवश्यकता है। इससे सरकारी नीति व कार्यशैली निर्धारण में मदद मिलेगी। चौधरी साहब की जन कल्याणकारी योजनाओं व निष्छल राजनीति से प्रेरणा लेकर प्रशासनिक व राजनैतिक तंत्र की विचारधारा को बदलने की अत्यंत आवश्यकता है ताकि ग्रामीण गरीब-मजदूर व किसान वर्ग के कल्याण व उत्थान के साथ-साथ स्वच्छ प्रशासन के लिए मार्ग प्रस्त हो सके। वास्तव में ताऊ देवीलाल गरीब व असहाय समाज की आवाज को बुलंद करने वाले एक सशक्त प्रवक्ता थे इसलिए आज जन साधारण विशेषकर ग्रामीण गरीब-मजदूर, कामगार व छोटे काश्तकारों को अपने अधिकारों व हितों के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता है ताकि दलगत राजनीतिज्ञ व संबंधित प्रशासन इनके हितों की अनदेखी न कर सके तभी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का एक स्वावलंबी व स्वस्थ ग्रामीण समाज का सपना पूरा किया जा सकता है और जगत ताऊ देवी लाल के 25 सितम्बर, 1914 से 6 अप्रैल 2001 तक के समय को सार्वजनिक हित में अनुशरण करने की आवश्यकता है। अतः एक उदार हृदय एवं महान आत्मा ताऊ देवीलाल को लेखक सदैव नत मस्तक होकर प्रणाम करता रहेगा।

चौधरी देवीलाल के मुख्यमंत्री काल में लेखक हरियाणा पुलिस (गुप्तचर विभाग) के प्रमुख रह चुके हैं।

डा0महेन्द्र सिंह मलिक
आई0पी0एस0(सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं
राज्य चौकसी ब्यूरौ प्रमुख, हरियाणा
प्रधान, जाट सभा चंडीगढ़ / पंचकुला एवं
अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति

फल की इच्छा

& jkgh] t ; i|j

गुजरात के जज महाशय की कृपा से गीता एक बार फिर चर्चा में है। उन्होंने कहा कि अगर वे तानाशाह होते तो गीता, उपनिषद को पहली कक्षा से ही पढ़ाना शुरू करवा देते। न्यायाधीश महोदय के इस कथन के समर्थन में उत्तर प्रदेश के बढ़बोले मंत्री ने फरमाया कि गीता ही क्यों बाइबिल और कुरान भी पढ़ना चाहिए। वे चाहे हमारे मित्र हों लेकिन हम इन दोनों की बातों से सहमत हैं। पता नहीं क्यों हम और हमारे तथाकथित प्रगतिशील मित्र इन ग्रंथों से दूर भागते हैं मानो इनमें 'एटम बम' रखा हो। गीता को ही लो। इसका एक वाक्य ही अगर इंसान हृदय में समा ले तो कसम से वह दुनिया में कुछ भी कर सकता है– 'करम किये जा फल की चिंता मत कर ए इंसान' लेकिन हम करम करने से पहले फल की चिंता करने लगते हैं। आम का पेड़ बोने से पहले मीठे–मीठे आमों का आमरस पीने की योजना बना लेते हैं। अरे भले आदमी पहले पौधा लगाा तो सही। आम का पौधा लगाना और पालना उतना ही कठीन है जितना एक पुत्र को पाल कर योग्य बनाना। फल की चिंता में ही आदमी दुबला हो जाता है। करम करने में पेट की आंतों के टांके टूटते हैं। पैरों पर जोर पड़ता है। नींद हराम हो जाती है। आदमी हमेशा से आराम का दास रहा है। उसका बस चले तो वह खड़े होकर पानी तक न पीये। लेकिन ईश्वर ने उसकी मांसपेशियां ही ऐसी बनाई हैं कि अगर उन्हें काम में न लिया जाएगा तो वे जुड़ जाएंगी। इसलिये झक मार कर आदमी को काम करना पड़ता है। अरे हम कौन सा कह रहे हैं कि गीता, रामायण, महाभारत, कुरान, बाईबल बच्चें को घोट कर पिला दो। हम यही कह रहे कि इन महान किताबों में जो कुछ सार की चीजें हैं उन्हें तो बताओ। कम से कम हरेक बच्चे को यह तो पता चले कि कुरूक्षेत्र, कर्बला और क्रूस क्या था। कम से कम वे दुर्योधन को पांडवों का बाप तो न कहें। गीता आगे यह भी कहती है कि जैसे कर्म करेगाा वैसे ही फल मिलेंगे। अब ऐसी मूल बातें ही हम अपनी औलादों को न बताएंगे तो क्या 'मेरे होटों को सीने से यार चिपकाले' जैसे रूमानी गीत सिखाएंगे। अब साहब मैंने तो अपनी समझ से ये दो बातें कह दी। आगे आप जानें और आपका काम जाने। लेकिन इतना जरूर कहेंगे कि जिसने जिन्दगी में इन पवित्र किताबों का सार नहीं पढ़ा उसका जीवन बगैर चप्पू की नाव है जिसे हवा जिधर चाहे ले जा सकती है।

Two Innovative Half Baked Budgets

- R.N. Malik

26th & 28th February are two very important dates in Indian calendar when Railway and Financial budgets are presented in the Parliament every year. An unprecedented hype was created this year about the outcome of game changing proposals in both the budgets. Shri Narendra Modi in his pre-election rhetorical speeches had called for converting Indian Railways (IR) as engine of growth and also to take up big ticket projects to achieve 10% growth. People had voted for him only on one count in the last May 2014 elections; that he would be able to create large employment opportunities for the youths. Now India is being called Young India because 65% population is below the age of 45 years. Therefore the two budgets are the test piece for the fulfillment of hopes and aspirations of a vast army of Indian youths.

But the performance of his government during the last 9 months has been staid and below par. He did some good work in many areas e.g. launching of Swachh Bharat Abhiyan, Jan-dhan Yojna, glorification of Girl Child, historical Business Meet at Ahmadabad, improving Investment Climate during his visits to Japan and USA, inviting President Obama on the Republic Day, tossing the idea of Make-In-India, promoting co-operative federalism and allowing States to spend 42% of the tax accruals, re-fixing very high targets of generating 1.75 lac MW of green power by 2022 (75th year of India's Independence) increasing the coal mining capacity to one billion tons by 2019 and stress on skill development. Somehow the youths were not impressed with his efforts and they showed their ire and resentment in the recent Delhi elections. The common refrain these days is, "If elections are held again, BJP will meet the same fate as it did in Delhi elections."

Let us analyze the Railway budget first. Mr. Suresh Prabhu, the Railway Minister neither announced any new train nor any new railway line. He calls this decision as the biggest reform. But this decision has caused greatest disappointment to the common man. This is because everybody prefers train to bus journey and there is a great shortage of new trains and new railway links & lines. For example if a 25 kilometer Uklana-Narwana line is laid, the train service between Sirsa-Hisar and Chandigarh can be started to benefit a large number of travelers. Likewise large numbers of railway tracks are grossly underutilized. For example hardly two trains run on the newly laid Rohtak-Rewari line. This underutilization of tracks is one of the main causes of accumulating IR losses. Financially IR is existing and living below the poverty line. 92% of the revenue is used in the maintenance works and disbursement of salaries for its large army of employees.

The bright side of the budget is that it proposes to spend Rs. 8.5 lac crore during the next 5 years for electrifying, doubling, tripling or even quadrupling tracks in high density zones. This single proposal is the back bone of this budget. In fact, this year's budget is a five year budget for the year 2015-20. The work of doubling and electrifying the tracks has been very slow (180 kms/year). Hence, it is a big leaf to move forward.

Other proposals are to convert 800 kms of meter into broad-gage and traffic facility works at junctions e.g. construction of longer loops, small block sections, by-pass lines, augmenting terminal capacity and de-bottlenecking critical sections with special funding of Rs.2325 crores. 1200 kms of tracks will be doubled in the year 2015-16. Projects for fast tracking 9400 kms at a cost of Rs. 96000 crores will be in the pipeline by March 2016. The priority of lines to be taken up will be determined by a special committee constituted for this purpose. Likewise work on electrification of 7000 kms of track will be taken up by March 2016. Other minor proposals relate to providing cosmetic facilities for the passengers in booking and providing bio-latrines in the trains. Obviously the maximum stress is on increasing the throughput for the purpose of fast crossing of trains on the tracks. It is also proposed to purchase power directly from the power producers to reduce the present annual bill of Rs.11000 crore. This is the end of the story of the new railway budget.

But the Hon'ble Minister is unable to precisely specify how he will be able to arrange Rs. 1.70 lac crore per year. Finance Ministry will give only Rs. 45000 crore per year on an average. There are 369 projects for doubling and electrification of tracks which are stuck up either due to lack of funds or lack of clearances. There is no mention of funding and targeting the completion schedule for the two flagship projects of Freight Corridors. Equally woeful is the silence on 300 kms new railway lines to be laid in coal field areas for expeditious evacuation of coal from the new mines. There is no mention of sanitation drive both within the trains and along the tracks. You cannot stand without a handkerchief on your nose at any major railway station. Likewise there is no mention of large number of railway over-bridges required to get rid of massive traffic jams at the railway crossings in various cities. Therefore, arrangement of funds to the tune of Rs.1.7 lac crore every year to fulfill its commitment of completing the 369 pending projects is the billion dollar question. This uncertainty will continue to haunt the IR in the entire project period. Over crowding in general coaches and none-punctuality in the arrivals of trains are two other big issues causing headaches to the travellers. The Hon'ble Railway Minister harps on PPP model but it will not work effectively in the Railways.

The real problem of inefficiency in IR is its oversize. It is almost impossible to control the railway network in a vast country like India with one single authority. Therefore, IR has become a behemoth organization and urgently needs to cut its flab. Large number of committees were set up in the past to advise on re-structuring this octopus organization. All the reports are licking the dust. Now one more Committee under Bibek Debroy has been set up to repeat the same exercise.

Presently, IR is very much afraid of increasing the fares to improve its financial health. Even after 14% increase in June last year, the fares are very low as compared to bus fares on the parallel routes. For example the ordinary bus fare from Delhi to Chandigarh is Rs. 219 whereas that of a Mail train in the ordinary class is Rs 85/-. Besides this, the daily pass holders enjoy almost a free ride. Ticketless travelling is another big issue.

All these issues can be mitigated if the IR allows States to run all the local trains within their respective territories. This single step will save IR from huge losses and headaches. It is much easier for the states to increase the fares and run the network at breakeven points. Secondly this will also encourage the states to utilize the grossly underutilized tracks to full capacity- a great bane of IR. Further, the states can lay down new railway tracks according to their needs. In this way the railway network will grow exponentially without the involvement of IR. The states will take half the time in laying new railway lines than what IR normally takes. Most of our states are larger than European countries and they should be allowed to run their own railway networks within their beats. IR should run only interstate trains and work more efficiently.

Now the problem is how IR will be able to arrange external or market borrowings to achieve its targets. LIC has offered to provide Rs 30000 crores for the purpose. IR is very soon going to sign an MOU with Japanese Government to infuse 4% of her PF funds into Indian Railways. Borrowing is recommended if the borrower is in a position to pay back the debt by earning profit from running of the services like DMRC. But IR is thoroughly incapable of achieving that feat because, like DMRC, it is not being run on professional lines and has become a social service organization. Obviously getting such big loans with little hope of repaying is not a prudent financial proposition. Therefore, IR must learn to stand on its own feet like NTPC or DMRC. The vision of IR should be to make the service as an engine of growth in Indian economy. This will be achieved only if all the tracks are electrified to save Rs.19000 crore of diesel consumption and bring back 50% passenger and freight load from the road transport. The budget does not tell how to create its own assets and revenues (like DMRC) and take up future projects without loans. In other words, IR should be innovative enough to become a success story like DMRC or NTPC. This situation makes the budget partly good and partly bad or half-baked. IR will be able to stand on its own feet only when it allowed the state to run their own railway services within their beats and increase the fares. People are ready to pay more if the railway service is punctual, clean, uncrowned and more frequent. Only these two big ticket bold reforms will make the railways to be self-sufficient.

The financial budget is more broad based than the Railway budget and has been prepared with greater amount of homework. The central theme of the budget is to achieve 8.5% of growth of GDP by 2017 and generate employment opportunities for the youths on a massive scale. But larger picture should have been drawn to achieve two prolific objectives i.e. to beat China in the economic race and eradicate total poverty by 2025 by developing a sustainable model of economy. The budget 2015-16 holds no such promise. However the Finance Minister has made a marathon effort to prepare the budget and encompass many issues to target 8.5% growth. It has many give-aways but also has unaffordable misses. This effort can be divided into following five categories. (I do not wish to go into the social sector issues).

1. To achieve the target of Swachh Bharat Abhiyan by Oct 2019 including Cleaning Ganga project.
2. To translate the concept of Make-In-India into realty.
3. Revolution in Energy Development.
4. Infrastructure Development.
5. Third generation reforms.

Targets of these five parameters if taken together in a coordinated manner can definitely raise the bar of economic growth on sustained basis though many important issues have remained untouched. This hope is with the rider that there will be no slippage in free flow of funds and no road blocks in getting timely project clearances.

(a) Swachh Bharat Abhiyan:- This movement proposes to install sanitary latrines in 6 crore households by October 2019. The budget provides a sum of Rs. 4300 crore for FY 2015-2016. The FM has wisely increased a 2% surcharge in the service tax to net Rs. 9000 crore per year. He has also increased the green cess on coal by Rs.100 per ton. The budget also provides exemption of tax for deposits in the Swatchh Kosh. Providing latrines in 6 crore households will generate an economy of Rs. 120,000 crores over a period of five years or Rs. 24000 crore per year. Now you can imagine the amount of employment to be generated by spending this amount per year. Obviously the money spent on this project will go to local artisans. But the budget provides only Rs.4300 crore for this purpose. It is not known how the Urban Development Ministry will provide the balance funds. Similarly the source for providing rural latrines has also not been indicated.

Swachh Bharat Abhiyan will remain a half baked solution to the Amazonian problem of insanitation in the country till we include such activities as 100% sewerage system in all the towns, 100% recycling of the treated sewage for agriculture and horticulture purposes. 100% safe collection, disposal and recycling of solid waste, sweeping of roads, paving or grassing of areas between the building line and the edges of the roads, paving of streets etc. If this program is taken in its totality India will have a new birth/image/avatar like any other western country and human development index will rise abruptly. Therefore the FM should take up this program in its totality next year. The nature of this program is such that it will give a boost to the economy and the spent money will spread in all sections of the society to generate employment and increase the purchasing power.

(b) Translating the concept of Make-In-India into realty:- India spends lot of foreign exchange on purchasing machinery items from foreign countries. Maximum purchase is done by the Defense Ministry. The PM tossed up the idea that all big suppliers should set up their manufacturing hubs in India. FM has given four incentives in this regard:-

(i) Reduction of corporate tax by 5% over a period of 4 years.

(ii) Removing custom duties on 22 items.

(iii) Visa on arrival at the airport for investors coming from 150 countries.

(iv) Reduction of tax on technical services by 15%.

These four measures will not cut much ice till some subsidiary measures are also taken up simultaneously resulting in improving the, "Ease of doing business in India factor. The government has been rightly criticized by Deepak Parikh (founder of HDFC bank) that it could not improve this factor even a bit during the last 9 months. The most essential step needed in this regard is the setting up SEZs or modern Technology Parks at right places along the coastal areas. The budget speech of FM is totally silent on this important issue. POSCO project in Orrisa has been hanging in fire of the last 10 years and this government too could not do anything to help the hapless company.

(c) Revolution in energy development: The government deserves a big credit for developing green energy in a big way by setting a target of installing 1.75 lac MW by 2022 (Solar - 1.0 lac MW, Wind 0.6 lac MW bio mass-0.1 lac MW and micro-hydel-0.05 lac MW).It is not yet clear if 1.0 lac MW of solar power will include 0.40 lac MW solar energy at the roof tops.1.75 MW lac MW of renewal energy is equivalent to 35000 MW of thermal capacity as development of solar energy at night is Nil. Development of 25000 MW of green energy per year will generate huge investment from the private sector (average 8.0crore per MW).It will also bring lot of direct and indirect employment in the desert areas of Rajasthan, Gujarat and Andhra Pradesh. The beautiful part of developing renewable energy is its low gestation period. A 1000 MW solar power plant can be commissioned within one year. If this target is fulfilled year-wise, India will become the brand ambassador and a leading nation for developing green energy in the world. But do not forget that the entire green energy would be under the control of private sector. It appears that big corporate houses have advised the PM to increase the target of green energy development from 20000 MW to 1.75 lac MW.

Besides this, the government has expressed its intentions to set up 5 ultra-modern power plants (UMPP) each with a capacity of 4000 MW. The tenders of these plants will be called only after all clearances are in place. It is a big reform and named Plug and Play Policy. The experiment of UMPP has not been very encouraging in the past as only one plant of 4000 MW has been commissioned so far though works were allotted about 10 years back. These power development targets are over and above the power projects taken up by NTPC and other agencies. The target for 12th five year plan is 78000 MW.

(d) Infrastructure Development: The backbone of the GDP growth consists of rebooting the infrastructure development in core areas. The budget provides for spending Rs.70000 crore more in the infrastructure sector as compared to allotment of funds last year. Rs.14000 crore goes to highways, Rs.10500 crore to railways Rs.20000 crore to rural roads and Rs.14000 crore to low income group housing sector in rural and urban areas. Now construction of highways gets a total of Rs.42000 crore for the year 2015-16. Railways also get almost the same amount. The money earmarked for national highways will be spent for four-laning and six-laning. The budget also provides for setting up the National Infrastructure Board Development Fund with a corpus of Rs 20000 crore to assist different infrastructure projects. It also provides for tax free infrastructure bonds. Most infrastructure projects are not labour intensive and will not give a big boost to employment generation. Six projects which can really provide huge employment opportunities are as below:

i) Development of solar energy for cooking and water heating,

ii) Setting up new cities to act as sub-capitals in bigger states,

iii) 100% sewerage and drainage system in towns,

iv) Scientific collection, disposal and recycling,

v) Metro Rail service in big cities,

vi) Setting up Modern Industrial township

Unfortunately, the budget is totally silent on these important issues. There are many other issues in the sector - to

be described at the end. PPP model became the mantra/centre piece for infrastructure development in the UPA government but it started failing when people started opposing the payment of toll tax and state governments did not intervene. Now plug and play policy (obtaining all clearances before start of the project) alone will not help much till issue of payment of toll taxes is resolved. KMP Express stands as the biggest monument of failure of PPP model. However the proposed legislation for resolving disputes in public contracts will help a lot in fostering the PPP model. Tax -free infrastructure bonds will also help in resource mobilization to some extent.

(e) Financial Reforms: For the first time, the budget has taken up cudgels to introduce a number of financial reforms to improve the investment climate in the country. These reforms are outlined below:

1) A bill to be passed compelling rich people to declare their wealth in foreign banks.
2) A bill to be passed to prevent benami transactions within the country.
3) PAN number to be mentioned for transactions more than Rs.1.0 lac.
4) Efforts to be made to maximize transactions through credit and debit cards.
5) Direct benefit transfer (DBT) of subsidies to BPL families to prevent fund leakage.
6) 10% reduction in subsidies (Rs.26000 crore in the use of oil and fertilizers)
7) Constitution of a special authority under RBI to reform monitory policy to contain inflation below 6%.
8) GST to be rolled out in 2016.
9) Disinvestment in PSUs to fetch rupees Rs.69500 crore. Its utility is debatable.
10) Setting up MUDRA Bank with a corpus of Rs. 20000 crore to assist bottom-of-the
11) pyramid hard working entrepreneurs to get access to the credit.
12) Rs.50000 crore credit facilities for farmers.
13) Revisiting PPP model to ensure aggressive involvement of private sector in infrastructure development.
14) Replacement of wealth tax with 2% Surcharge tax on super rich people with an income of Rs.1.0 crore per year to yield an additional revenue of Rs.9000 crore per year.
15) Set up separate benches in High Courts to settle commercial disputes.
16) Deferring General Anti-Avoidance Rules (GAAR) by 2 years.
17) Clarification of section-9 of Income Tax Act 1961.
18) Creation of Bank Board Bureau.
19) Foreign investors to get MAT Boost (exemption of Minimum Alternate Tax).
20) Accepting the recommendations of 14th Finance Commission to release 42% funds to the states in order to improve federal fiscal relations.
21) To set up expert panel to settle the issue of multiple clearances required for any project by the investors.
22) Ports to be corporatized.
23) PSU CAPPEX at Rs.317000 crore.
24) To allow gold monetisation and introduce gold coins.
25) Clean Energy Cess on coal from Rs.100 to Rs.200 per ton of coal.
26) Introducing tax free Infrastructure Bond and Swachh Kosh in order to outsource the revenue.
27) Establishment of public debt management agency to prevent formation of NPA's in the banking sector.
28) A proposal to examine the possibility of starting a business without prior permission of in - accordance with clear policy guidelines would be a path breaking move towards fostering entrepreneurship.
29) Legislation for regulation and dispute resolution in infrastructure sector.
30) Bankruptcy code to change the landscape for resolving corporate distress.

Most reforms, though welcome, are cosmetic in nature. PM has put all the eggs in one basket i.e. Make-in-India program which indirectly aims to achieve four objectives in one go.

i) Save foreign exchange.

ii) Boost exports. (Many European and Taiwanese companies are ready to put up their units along the coastal areas and export their products because of the cheap labour availability in India. But to do so they need industrial townships of European standards).

iii) To attract FDI.

iv) To make India as a prolific manufacturing hub.

This dream will be realized only if two steps are taken urgently:-

1. Technology Parks of international standards near the ports.
2. Do away with bureaucratic red-tapism in the investment process.

These two factors alone will improve the, "Ease of doing business" factor in India. Presently India is at 162nd place in the International Table of, "Ease of doing business".

Final Analysis:-

Budgets in India (both Center & States) are never presented the way these should be presented. A good budget must speak out on following three issues:-

(a) It must explain the performance of the budget of the preceding year giving a detailed statement about the fulfillment of the provisions and promises made in the previous year. The FM presented the previous budget on 8th July 2014. He made a provision of Rs. 37000 crore to construct 8500 kms of highways @23 kms/- day. The target for this year is @ 30kms/-. According to information, NHAI could call tenders for 892 kms of roads only against 2500 kms in the year 2012. Obviously a large percentage of funds have remained unutilized and spill over has been shown as extra funds in this year's budget. This kind of trick is played by most Finance Ministers every year while presenting their budgets.

Other big ticket projects in last years' budget were Rs.50,000 crore for Urban Renewal Mission, Rs.14390 crore for Pradhan Mantri Gramin Sadak Yojna, Rs 7060 crore for smart cities. One does not know how much money has been actually utilized or remained unutilized. Likewise provisions were made to set up 5 new IITs, 5 IIMs, 4 AIIMS, 2 ARI like institutes of excellence in Assam and Jharkhand, 2 horticulture universities in Haryana and Andhra Pradesh. These projects are nowhere to be seen on the ground. Likewise the budget of the Railway Ministry also plays the same trick.

(b) The budget never relates its provisions co-terminus with the proposals of the 12th Five- -Year-Plan which is still in operation officially. The PM has already scrapped the Planning Commission without creating an alternate institution. NEETI Aayog is only an advisory body to suggest policy changes and hence a poor apology of the Commission. This mis-step will prove to be the costliest blunder of the Modi Government.

(c) The budget speech does not give a precise list of major projects to be funded during the current financial year. For example the statement of FM says that extra funds to the tune of Rs 70000 crore have been provided for infrastructure development but the sector wise break-ups are not given. Nor do we know the total provisions in the infrastructure and other sectors along with their break-ups.

The budget speech of FM runs identical to the one made last year and the thrust was on spurring growth, taming inflation and fiscal deficit, developing infrastructure, expanding employment opportunities and attracting investment. At the end of the year we do not see any breakthrough in any sector. The much needed relief in containing inflation was caused by fall in the oil prices from $120 to $45 per barrel. Recession in employment opportunities stays as before. Mr. P.C. Chidambaram is right when he says, "There is no path breaking proposal in the present budget like Noida-Balia Expressway." What is most distressing is the fact that many projects in core areas have remained unaddressed. These are outlined below.

1. The Centre Government has completely abdicated its responsibility of controlling the profligacy in the use of funds by the states. Remember how Ms. Mayawati wasted money in building parks with elephants. See how the previous CM of Haryana allowed Sarpanches to use huge amount of funds as they liked without maintaining account books. It has become a fashion with the Chief Ministers to use money like water in advertising their hollow achievements.

Co-operative federalism means that Centre Government must ensure that the funds are used by states are very judiciously and give good governance. Role of Centre Government over states is like that of RBI over the banks. Most CMs are treating states as their personal fiefs. One does not know what happens to the fortnightly reports sent by the respective Governors. The Central Government is a mute spectator to the activities of the State Chief Ministers. It is shocking to observe that the PM has not called even a single meeting of State CMs, so far to discuss development targets.

2. Three social sector schemes i.e. MNREGA (Rs.38000 crore), Food Security Act (Rs. 1.15 lac crore) and Sarva Shiksha Abhiyan (Rs. 28000 crore) look very ideal on paper. In fact, these schemes are a big source of corruption at the ground level. Remember the "fourteen paisa" statement of Late Sh. Rajiv Gandhi in this regard. This Government promised to rationalize these schemes but nothing was done at the end of the day. Mr Trivedi ex-Railway Minister was right when he said, "Give the entire amount to Railways for infrastructure development".

3. The budget is silent on the issue of bleeding Airlines. Losses incurred by Air India have gone up to Rs. 35000 crore. FCI has become a non performing asset (NPA). Sale of FCI stocks can bring a revenue of Rs 1.0 lac crore. Re-structure of FCI can further save huge amounts to the tune of Rs.30000 crore.

4. Power utilities in most states are in the thick of a vicious debt trap. The power utility companies in a small State like Haryana are buried under a heavy debt of Rs.38000 crore. RBI disallowed banks to give any loan in future till the state government stood the guaranty.

5. There is no control on States in raising loans. As a result many states (Haryana, West Bengal, Himanchal, UP and A.P.) are in the grip of vicious debt trap. Worst situation exists in West Bengal. The state is paying an interest of Rs.30000 crore every year and hardly any amount is left for development works. Ms Mamta Bannerjee met the Prime

Minister on 09.03.2015 to request for a moratorium on the outstanding loan of Rs.3 lac crore on the ground that it was bequeathed to her government by the previous CPI (M) governments. The Prime Minister did not oblige and advised her to re-pay this loan from the royalty coming from the auction of coal blocks.

6. The budget speech shows that GOI has decided not to press the States for developing hydro power any more. Hydro power potential is a gold mine for the development of hill states. Brahmputra Basin alone has the potential of developing 1.0 lac MW of hydro power at a power load factor of 0.90. Silence of the government is perplexing.

7. There is no proposal to develop water resources in major river basins. The budget provides a measly sum of Rs.5300 crore for minor irrigation schemes. There are many rivers whose run-off is flowing waste fully to the sea during the rainy season. Most notable is the example of river Yamuna. The proposed Keshao Dam, Lakhwar Dam and Renuka Dam will be able to store 3BCM of water to irrigate the parched lands of South Haryana, Rajasthan and northern UP. Second green revolution will come only when storage dams are constructed across rivers with surplus flows. The budget should have taken some initiative on this front.

8) The budget is also totally silent to finance the urban renewal projects this year. Rs. 2.0 crore were provided to initiate metro rail projects in Ahemdabad and Lucknow cities. We have not heard anything there after about these two important projects. Presently all our cities are in the process of decaying because there is no proper policy to regulate the growth of urban areas to accommodate rural population inflow. Many cities need to be decongested. Setting up new townships and fixing the limit of growth on big cities is the need of the hour.

9) Every township needs 100% water supply , sewerage , drainage and solid waste collection and disposal system .Each town also needs a circular road for survival. Bigger towns need metro rail service. Presently, traffic problem is becoming intractable in every congested city. The budget is totally silent on this important issue.

10) There is no effort to develop 7 North-East States to bring them into the national mainstream. These states are resplendent with natural resources and still these are in the midst of poverty trap. These states can grow immensely, if the projects in hydro power, horticulture , dairy development , oil exploration sectors are taken up expeditiously. These states also have the potential to bring white revolution in India.

11) There is no effort to control the burgeoning population in the country. We are adding one Australia every year. The budget is conspicuously silent on this important issue.

12) There is no project to generate revenue by developing mines, particularly the iron ore. Exports of iron ore can generate huge amount of foreign exchange. SMEs have been left high and dry. There is no specific project to boost oil exploration in the prospective areas; particularly in Rajasthan. The budget is also silent on the issue of low production capacity of coal under Coal India Limited .Import of coal this year has gone upto 265MT.

13) There is no special plan in the budget to develop tourism on international scale in Himachal, Uttarakhand, J&K and seven NE states. The road network in these states is in pitiable conditions. These states can become Switzerlands of India if tourism projects are taken up vigorously.

Therefore, the budget will remain a half-baked document till it addresses the aforesaid issues and keeps a strict watch on 100% implementation of projects earmarked in the budget. The infrastructure projects envisaged in the budget do not meet the needs of the country at all. It requires huge amount to build the desired level of infrastructure. Therefore, the first job FM is to prepare a road map for financing these projects in a sustained manner. In other words, the development of financial model is the need of the hour. The economic situation in china was worse than that of India in 1975. But Deng Xiaoping prepared a proper road map and financial model for developing China and implemented it vigorously. Now one can see the results and the difference of levels at which China and India are placed relatively. Indian Govt. needs to follow the path shown by Deng Xiaoping or the policies of Mrs. Margret Thatcher - the Iron lady of England.

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB July, 1988) 27/5'3" Bsc.Computer Science, MBA Gold Medalist from PU Chandigarh. Net qualified. Working as Assistant Manager in Nationalized Bank at Panchkula. Own house at Panchkula. Match preferred from Panchkula, Chandigarh, Mohali (Trycity). Avoid Gotras: Sangwan, Dangi, Doon. Cont.: 09988346779.
- SM4 Jat Girl (DOB 13.09.1987) 27.6/5'5" M. Tech. Employed as Lecturer at Rohtak. Avoid Gotras: Nandal, Pawaria, Ahalawat. Cont.: 09996060345, 09811658557
- SM4 Jat Girl 26/5'3" MCA, MBA Employed as supervisor in Central Govt. on Cont. basis. Avoid Gotras: Bagri, Nehra, Nain, Cont.: 09417415367
- SM4 Jat Girl 23/5'2" B.Tech (CSE),Avoid Gotra: Malik, Hooda, Joon, Cont.: 09780336094
- SM4 Jat Girl, 26/5'2" M.Sc. (Microbiology) Working as Senior Lab Technician in AL Chemist Hospital Panchkula. Avoid Gotras: Mittan, Kharb, Dahiya, Kadyan, Cont.: 08146082832.

जाट हीं तो है धर्मनिरपेक्षता का सहीं स्वरूप

& vkeçdk'k

महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती ने अपने महान ग्रंथ 'सत्यार्थप्रकाश' में लिखा है, ''यदि जाट जी जैसे पुरूष हों तो पोपलीला संसार में न चले।'' वे सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में जाट का उदाहरण देकर आगे लिखते हैं, ''एक जाट था। उसके घर में एक गाय बहुत अच्छी और बीस सेर दूध देने वाली थी। दूध उसका बड़ा स्वादिष्ट होता था। कभी–कभी पोप के मुख में भी पड़ता था। उसका पुरोहित यही ध्यान कर रहा था कि जब जाट का बुड्ढ़ा पिता मरने लगेगा तब इसी गाय का संकल्प करा लूंगा। कुछ दिन में देव योग से उसके बाप का मरण समय आया। जीभ बंद हो गई और खाट से भूमि पर ले लिया अर्थात् प्राण छोड़ने का समय आ पहुंचा। उस समय जाट के इष्ट मित्र और संबंधी भी उपस्थित हुए थे। तब पोपजी ने पुकारा कि यजमान! अब तू इसके हाथ से गोदान करा। जाट दस रुपया निकाल पिता के हाथ में रखकर बोला, पढ़ो संकल्प! पोपजी बोला वाह–वाह! क्या बाप बारम्बार मरता है? इस समय तो साक्षात गाय को लाओ जो दूध देती हो, बुढ़ी न हो, सब प्रकार उत्तम हो। ऐसी गाय का दान करना चाहिए।''

जाट जी बोला– हमारे पास तो एक ही गाय है उसके बिना हमारे लड़के–बालों का निर्वाह न हो सकेगा इसलिये उसको न दूंगा। लो! बीस रुपये का संकल्प पढ़ देओ और इन रुपयों से दूसरी दुधार गाय ले लेना। पोपजी– वाह जी वाह! तुम अपने बाप सेभी गाय को अधिक समझते हो? क्या अपने बाप को वेतरणी नदी में डुबा कर दुख देना चाहते हो? तुम अच्छे सुपुत्र हुए? तब तो पोपजी की ओर सब कुटुम्बी हो गये क्योंकि उन सबको पहले ही पोपजी ने बहका रखा था और उस समय भी इशारा कर दिया। सबने मिलकर हठ से उसी गाय का दान पोपजी को दिला दिया। उस समय जाट कुछ भी न बोला। उसका पिता मर गया और पोप जी बाच्छा सहित गाय और दोहने की बट लोही (बाल्टी) को ले अपने घर गया, बछड़े को बांधकर और बाल्टी धरकर पुनः जाट के घर आया और मृतक के साथ श्मशान भूमि में जाकर दाह कर्म कराया। वहां भी उसने कुछ–कुछ पोप लीला चलाई। तत्पश्चात दशगात्र सपिंडी कराने आदि में भी जाट को मूंडा। महाब्राह्मणों ने भी उसे लूटा और भुक्खड़ों ने भी बहुत सा माल पेट में भरा अर्थात् जब सब क्रिया हो चुकी तब जाट ने किसी के घर से दूध मांग–मूंग कर निर्वाह किया। चौदहवें दिन प्रातः काल पोपजी के घर पहुंचा। देखा तो पोप गाय दुह, बाल्टी भर, पोप की उठने की तैयारी थी। इतनेही में जाट जी पहुंचे और उसको देखकर पोपजी बोला, आइये! यजमान बैठिये। जाट जी– तुम भी पुरोहित जी इधर आओ। पोपजी – अच्छा दूध धर आऊ। जाट जी– नहीं–नहीं दूध की बाल्टी इधर लाओ। पोपजी बेचारे जा बैठे और बाल्टी सामने धर दी। जाट जी– तुम बड़े झूठे हो। पोपजी– क्या झूठ किया? जाटजी– काहो! तुमने गाय किस लिये ली थी? पोपजी – तुम्हारे पिता के वैतरणी नदी तैराने के लिये। जाट जी – अच्छा तो तुम ने वहां वैतरणी के किनारे पर गाय क्यों न पहुंचाई हम तो तुम्हारे भरोसे रहे और तुम इसे अपने घर बांध बैठे, न जाने मेरे बाप ने वैतरणी में कितने गोते खाये होंगे? पोपजी – नहीं–नहीं वहां इस दान के पुण्य के प्रभाव से दूसरी गाय बनकर उसको उतार दिया होगा। जाट जी – वैतरणी नदी यहां से कितनी दूर और किधर की ओर है? पोप जी – अनुमान से कोई तीस करोड़ कोश दूर है क्योंकि उन्चास कोटि योजन पृथ्वी है और दक्षिण नैर्ऋत दिशा में वैतरणी नदी है। जाट जी– इतनी दूर से तुम्हारी चिट्ठी वा तार का समाचार गया हो, उसका उत्तर आया हो कि वहां पुण्य की गाय बन गई, अमुक के पिता को पार उतार दिया, यह दिखाओ? पोप जी– हमारे पास गरुड़पुराण के लेख के बिना डाक वा तार बर्की दूसरा कोई नहीं। जाट जी– इस गरुड़पुराण को हम सच्चा कैसे मानें? पोपजी – जैसे सब मानते हैं। जाट जी– यह पुस्तक तुम्हारे पुरुखाओं ने तुम्हारी जीविका के लिये बनायी है क्योंकि पिता को बिना अपने पुत्रों के कोई प्रिय नहीं। जब मेरा पिता मेरे पास चिट्ठी पत्री व तार भेजेगा तभी मैं वैतरणी नदी के किनारे गाय पहुंचा दूंगा और उनको पार उतार पुनः गाय को घर ले आ दूध ा को मैं और लड़के बाले पिया करेंगे, लाओ! दूध की भरी हुई बाल्टी, गाय, बछड़ा लेकर जाट जी अपने घर को चला। पोपजी – तुम दान देकर लेते हो, तुम्हारा सत्यानाश हो जायेगा। जाटजी – चुप रहो! नहीं तो तेरह दिन दूध के बिना जितना दुख हमने पाया है सब कसर निकाल दूंगा। तब पोप जी चुप रहे और जाट जी अपनी गाय बछड़ा ले अपने घर पहुंचे।

जाट की आकृति–प्रकृति एवं स्वभाव :

ऋषि दयानंद ने उदाहरण देकर जाट की आकृति–प्रकृति एवं स्वभाव का वर्णन कर उसकी भूरि–भूरि प्रशंसा की है। स्वामी दयानंद के अनुसार जाट के स्वभाव में शर्मीलापन है। उसने अपने कुटुम्बियों और परिवारजनों की लिहाज से पोप को गोदान कर दिया परंतु जब गोदान के पीछे सच्चाई न पा कर केवल ठगी ही पाई गई तो जाट ने कठोरता से ठगी का भण्डा–फोड़ कर दिया तथा गाय वापिस ले आया और पोप के मिथ्या विलाप पर उसे धमका कर कह दिया कि अधिक बोला तो तुम्हारी इसी ठगी के पीदे तेरह दिन तक हम जो दुखी हुए हैं उसकी सारी कसर निकाल दूंगा। ऋषि दयानंद ने यह भी दर्शाया है कि पोपों के गुरुड़ को जाट सच्चा न मान कर केवल उनकी आजीविका के साधन भर मानता है। ऋषि दयानंद ने अपने भाषणों और आलेखों में कहा भी है कि केवल जाट ही विशुद्ध आर्य क्षत्रिय है, जमाने की गर्दिश भी उन्हें अनार्य नहीं बना सकी क्योंकि जाटों ने कभी–किसी ढोंग पाखंड एवं मत–मतांत्र को नहीं माना। जाट ईश्वर की सीधी उपासना में विश्वास रखता है। जाट का मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा और गिरजा, उसके खेत और खलिहान हैं, उसका परिश्रम, उसका शुभ कर्म, उसकी नेक कमाई ही उसका मजहब है, धर्म है, ईमान है। जाट भूखा होकर भी किसी से नहीं मांगता क्योंकि जाट याची या मंगता नहीं वह तो दाता है, उसकी नेक कमाई में सबका साझा है, वह प्रायः बांटकर खाता है। जाट के प्रत्येक कार्य में सादगी और सच्चाई का भाव पाया जाता है। उसका प्रत्येक कार्य भय, शंका और लज्जा रहित होता है। जाट प्राय जंगल में रहता है उसे किसी जंगली जानवर, भूत–प्रेत एवं दैवी आपदाओं का भय नहीं होता है वह बेभय, बेखौफ अपने कार्य में तल्लीन रहता है। जाट का रूप शेर का रूप है। जिस प्रकार शेर जंगल में होता है, उसके जंगल में रहते कोई जंगल को नहीं काट सकता उसी प्रकार जाट खेत में रहता है और उसके रहते कोई

उसका खेत नहीं काट सकता। जिस प्रकार शेर अपनी जान पर खेल कर जंगल की रक्षा करता है तथा शेर को मारकर ही जंगल को काटा जा सकता है। उसी प्रकार जाट अपने खेत और देश की रक्षा करता है और वह मोर्चे में अपनी अंतिम सांस तक लड़ता है, उसके देश को कोई उसकी मौत के बाद ही फतह कर सकता है। जिस प्रकार शेर भूखा होकर भी घास नहीं खायेगा, उसी प्रकार जाट भूखा होकर भीख नहीं मांगेगा। जिस प्रकार शेर दरया में पानी के भाव को चीरकर नदी को सीधा पार करता है। उसी प्रकार जाट अपने दुखों के समुद्र को, अपने स्वाभिमान के साथ, बिना किसी को सहायता के पार करता है। कवि का शेर और जाट के प्रति कथन है, ''सैले हवादिस भी मोड़ सकते नहीं मर्दों के मुंह, शेर सीधा तैरता है वक्ते रफतन आब में।'' जाट किसी को नहीं ठगता वह अपने भोले स्वभाव के कारण स्वयं ठगाई में आता है। जाट न किसी को डराता है न किसी से डरता है। जाट के स्वभाव, हाव–भाव और बोल–चाल में सच्चाई की गर्मी है, यथार्थ की तपिश है, उसकी आक्रोशपूर्ण भाषा उसकी भीतरी स्वच्छता का दर्पण है, वह निर्मल और पवित्र मन से सोचता है और बेधड़क होकर बोलता है, उसकी कड़वाहट में सत्यता की मिठास है, उसकी वाणी के प्रत्येक स्वर में निःसंशय का आभास है। अतः वह निःसंकोच है, निःसीम और निःस्वार्थ है, वह निःस्पंद व निःसंदेह है, वह अपने कार्य कलापों में निष्कलंक है, उसका शुभकर्म ईश्वर की निगाह में निरपवाद है, उसका हर बोल निरमोल है, समाज के प्रति उसकी सोच निरलेप है, जाट का प्रत्येक आचरण निर्विरोध, निर्विवाद, निर्विकार और निशंक है। वह अपने कार्यों में सदा निश्चिंत, निश्चेष्ट, निष्कपट, निष्कंटक और निष्काम भाव से उदित रहता है, उसके शुभ कर्म की प्रत्येक भूमिका निर्विवाद और निर्णायक है। जाट–जाट के घर में जन्म लेकर शर्मिंदा नहीं गर्वीला है। उसे गौरवपूर्ण जीवन जीने की आदत है और गौरवपूर्ण मर्यादा पर मर–मिटने में आनंद आता है। जाट कभी रंडवा नहीं रहता और जाट की बहु कभी विधवा नहीं होती। जाट का पुनर्विवाह में विश्वास है। जाट कभी छुआछूत को नहीं मानता और न किसी से घृणा करता है। जाट की धर्मनिरपेक्षता का यह आलम है कि वह जाति तोड़ एवं अंतरजातिय विवाह करता है। वह अपनी उदारभावना के कारण नियोग में भी विश्वास रखता है और नियोग द्वारा संतान उत्पत्ति में भी परहेज नहीं करता। जाट मूर्ति पूजक नहीं है। उसका परमात्मा से सीधा नाता है। वह ज्योतिष, ढोंग, पाखंड व देवी–देवताओं में विश्वास नहीं रखता। जाट न किसी की चापलूसी करता है और न किसी की निंदा करता है। जिसको कुछ कहना हो साफ–साफ स्पष्ट, बेधड़क, बेखौफ और बेखटके कह देता है। जाट किसी की मिथ्या बड़ाई भी नहीं करता और न आलोचना करता। अंग्रेजी के महान कवि शेक्सपीयर ने अपने नावल 'मर्चेंट ऑफ बीनस' में कहा है कि जितना बड़ा कोई बहादुर होगा वह उतरा ही रहमदिल होगा और जितना बड़ा कायर होगा वह उतना ही बड़ा बेरहम होगा। अतः जाट अपनी बहादुरी के कारण दयावान है। शरणागत की रक्षा और आगंतुक का स्वागत, जाट की महान परंपरा है। जाट का जीवन किसी के आश्रय पर टिका हुआ नहीं है वह अपने आत्मविश्वास और बाहुबल पर जिंदा है। जाट का पंचायती परंपरा में अटूट विश्वास एवं श्रद्धा है। कहावत है कि 'जाट से अकेले में लड़ियों मत और जाट की पंचायत से डरियो मत।' जाट न्याय प्रिय है और जाट की पंचायत न्याय की प्रतीक है। लोकोक्ति अनुसार जाट कहता शर्माता है लेकिन न्यायिक प्रक्रिया के लिये लड़ता हुआ नहीं शर्माता। जाट सच्चा आर्य और बैदिक धर्मी है। जाट बात का धनी और अपनी मर्यादा का पालन करता है। जाट पशु पालक है और प्रचुर मात्रा में दूध घी आता है। जाट अपने स्वास्थ्य के प्रति सदा सजग और चौकस रहता है। जाट निर्बल न्यायी की सहायता करता है और सबल अन्यायी के विरुद्ध लोहा लेता है। जाट प्रायः दूसरों की आग में जलने का शौकीन है। देश रक्षार्थ जाट चाव के साथ सेना में भर्ती होता है। जाट मरने मारने और लड़ने में विश्वास रखता है। किसी समय सिखों के नेता रहे संत फतह सिंह से संवाददाताओं ने पूछा, ''संत जी पाकिस्तान बनने से पहले आप मुसलमानों से लड़ते थे, फिर हिन्दुओं से लड़ते रहे और अब आप आपस में ही लड़ने लग गये?'' संत जी ने उत्तर दिया, ''असी बहादुर जट हैं, साडा काम है लड़ना, साडे नाल कोई होर नहीं लड़ेगा तो असी खुद लड़ेंगे।'' अतः लड़ाई जाट के चरित्र का एक हिस्सा है। जाटों से जब कोई पूछता है कि सब जातियों में आपसी समन्वय एवं एकता हो जाती है परंतु जाटों में कभी एकता नहीं होती? इस पर उनका उत्तर होता है कि एकता भेड़ बकरियों में होती है, शेरों में कभी एकता नहीं होती और वे हजारों भेड़ बकरियों भी एक शेर का कुछ नहीं बिगाड़ सकती। अतः जाट को इस बात की परवाह नहीं है कि वह अपनी जाति में एकता के बिना अकेला है, अकेलेपन का उसे कोई डर नहीं सताता क्योंकि भगवान ने उसे आत्मविश्वासी और बाहुबली बनाया है और उसमें यह विश्वास जगाया है कि तू किसी से मत डर। जाट को अपने स्वावलंबन पर अटूट भरोसा है जिस कारण वह किसी दूसरे से अपनी सुरक्षा की भीख नहीं मांगता। जाट किसी मंदिर में बैठकर तथा घड़ी–घंटाल बजाकर ईश्वर को रिझाने का ढोंग नहीं करता वह तो अपने शारीरिक कर्म यानी परिश्रम से ईश्वर की उपासना में विश्वास रखता है। जाट ईश्वर और प्रकृति के प्रत्येक नियम का पालन करता है। चारों वेद, छह शास्त्र और गीता के आदर्शों को जाट आर्य (क्षत्रिय) होने के नाते पूरी तरह मानता है और उनके अनुसार ही अपना जीवन यापन करता है। जाट इस देश को आर्याव्रत के नाम से जानता, मानता और पुकारता है। इस देश का नाम हिन्दुस्तान उन हिन्दुओं का रखा हुआ है जो पत्थर यानि मूर्ति पूजते हैं और जिन्होंने अपनी आजीविका के लिये गरुड़पुराण जैसी पाखंड से भरी कृतियों को घड़ रखा है क्योंकि वेदों, शास्त्रों और गीता में कोई पोपलीला या पाखंड नहीं है। उसका ज्ञान तो मनुष्य के लिये सही और सच्ची जीवन पद्धति को ही दर्शाता है जिनमे ज्ञान पर जाट का अटल और अटूट विश्वास है।

गांव की अन्य जातियों के साथ जाट का व्यवहार :

जाट मानवता में विश्वास रखता है। प्रत्येक मानव जो इस धरती पर विचरता है, जाट उन सबमें परमेश्वर का स्वरूप देखता है, परमेश्वर के बंदे मानकर ही उन सबका आदर करता है, उन सबसे प्यार करता है, यथाशक्ति उनकी सहायता करता है, किसी के प्रति घृणा या द्वेष का भाव न रखकर उनके साथ मानवता का व्यवहार करता है। किसी के साथ छल–कपट धोखा या ठगी न करके उनके साथ आत्मीयता का रिश्ता स्थापित कर मेल–मिलाप से रहना चाहता है या रहता है। ब्राह्मण से लेकर चूहड़े तक जाट का बेटी–रोटी का रिश्ता है। समाज की छत्तीस बिरादरियों के बीच जाट एक धुरी की भूमिका अदा करता है। ब्राह्मण ने इस समाज में जो परम्पराएं स्थापित की हैं या जो नई व्यवस्थाएं वह लागू करता है, जाट भी उनहें अपनी मान्यता प्रदान करता है। समाज की उच्च बिरादरी होने के नाते, ब्राह्मण ने अपने लिये कुछ ऊंचे मानदंड तय किये हैं। सामाजिक रिश्ते नातों के लिहाज से ब्राह्मण को छोड़ कर अन्य सब बिरादरियों में, आपसी बातचीत एवं बोलचाल में सबके

आपस में चाचा–ताऊ, भाई–भतीजा आदि के रिश्ते हैं परंतु ब्राह्मण का रिश्ता अन्य सब बिरादरियों के साथ चाचा–ताऊ तथा भाई–भतीजे का न होकर केवल दादा का रिश्ता है। पांच वर्ष के ब्राह्मण से लेकर सौ साल के ब्राह्मण तक वह सब का दादा लगता है, उसे सब दादा कहकर पुकारते हैं या बोलते हैं। अन्य बिरादरी का सौ साल का बुढ़ा भी ब्राह्मण के पांच वर्ष के अबोध बालक को दादा कहकर ही पुकारेगा, उसे बड़पन की मान्यता प्रदान करेगा। इसी प्रकार ब्राह्मण की पत्नियां भी सब की दादी और वे ब्राह्मण की भांति उसी आदर भाव से पुकारी जाएंगी। अन्य बिरादरी का कोई भी बड़े से बड़ा व्यक्ति ब्राह्मण से बात करनी दरकार हो तो चार कदम की दूरी से या तो खड़ा होकर ही बतलायेगा या फिर उसके समुख धरती पर नीचे बैठकर बात करेगा। ब्राह्मण का हुक्का या उसके मटके का पानी भी अन्य बिरादरी का व्यक्ति नहीं पी सकता। अन्य जाति का व्यक्ति न तो ब्राह्मण को छू सकता है और न ब्राह्मण भी अन्यों को छुएगा। अन्य जातियों को ब्राह्मण द्वारा पानी पिलाने का जो तरीका ब्राह्मण ने तय किया उसके अनुसार उस की पयाऊ पर पांच फुट लम्बी लोहे की नलकी से पिलाया जा सकता है। ब्राह्मण केवल जाट या बनियों के घर ही भोजन करेगा। आजादी के बाद सन् 1955 में स्वदेशी सरकार ने स्पर्शता का कानून बनाकर छुआछुत पर पाबन्दी लगाने का प्रयास किया था जिसके माध्यम से कुछ श्रृंखलाएं तो अवश्य ढ़ीली पड़ी परन्तु ब्राह्मण की ओर से अब भी बहुत सारी कायम हैं। जाट ने भी दूसरी बिरादरियों के साथ, ब्राह्मण की उक्त परम्पराओं को मान्यता दी और उन्हें परवान चढ़ाया। जाट के घर शादी हो तो मिठाई के कोठे का मालिक जायेगा तब जाकर अन्य लोग भोजन करेंगें। अमावस्या हो, पूर्णमासी हो, कोई भी तीज–त्यौंहार हो, साल में श्राद्धों में पंद्रह दिल यानी श्राद्ध पखवाड़ा हो, शादी हो, जन्म हो जन्मदिन हो या कोई और मुहूर्त का या खुशी का शुभ दिन हो और यहां तक कि जाट के घर में किसी की मृत्यु भी क्यों न हुई हो, ब्राह्मण का भोजन, उसकी दान–दक्षिणा आदि के जो माप–दंड, ब्राह्मण द्वारा तय किये हुए हैं, सब पूरे किये जाते हैं वर्ना तो ब्राह्मण का श्राप (शाप) जाट के सिर पर खड़ा हो जाता है। लेकिन फिर भी जाट से ब्राह्मण के दिल की दूरी का फासला कोसों का बना रहता है।

जाट समाज की अन्य सब बिरादरियों को अपने यहां शादी में आमंत्रित करती है, भोजन कराता है और ब्राह्मण को तो उस खुशी की दक्षिणा भी देता है परन्तु अन्य जातियों के विवाहों में जाट को भोजन के लिये आंमत्रित नहीं किया जाता हां यदि जाट उन्हें दक्षिणा के रूप में लत्ते–कपड़े या नकद रूपये–पैसे दें तो वे उन्हें जरूर स्वीकार कर लेते हैं। जाट भी दाता के रूप में अपना दान देने का कर्त्तव्य जरूर निभाता है। हरिजनों के घर लड़के–लड़कियों की शादी हो, पिछड़ी जातियों के बच्चों की शादियां हों, जाट की आार्थिक सहायता के बिना उनके विवाह सम्पन्न नहीं होते। जाट उनकी प्रत्येक प्रकार की यथास्थिति सहायता करता आया है। जाट के खेत–खलिहान में वे सब अपना साझा मानते हैं और जाट भी खुले हाथ से उनकी सहायता करता है। गांव में अन्य बिरादरियों के लोग सभी पशु रखते हैं, उनके लिये घास–फूंस और चारे का साधन केवल जाट का खेत है। जाट के खेत में बेरोक टोक उनका आना जाना है। अपने खेत से मुफ्त चारा ले जाने के लिए जाट उन्हें कभी मना नहीं करता। जाट के खेत से चारा लाना वे अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानते हैं। जाट भी इस परम्परारूपी रियासत को निभाये जा रहा है। हजारों साल से कर के रूप में ये बिरादरियां जाट को अनायाय चूंट–चूंट कर खाये जा रही हैं। गांव में कोई भी शामलात कार्य हों जैसे कुआं बनाना, जोहड़ खोदना, धर्मस्थल स्थापित करना, पाठशाला का भवन तामीर करना, किसी भी खर्च में अन्य बिरादरियां गरीबी का बहाना लेकर, अपने हिस्से की बांच देने साफ बची रहती हैं। मगर जाट इन सब बातों की भी परवाह नहीं करता और सारा बोझ स्वयं वहन करता रहा है। जाट के अलावा अन्य बिरादरियों पर कोई भी अपत्ति पड़े, जाट उनकी सहायता के लिये हर दम तैयार रहता है। गांव में कोई चोर–डाकू, लुटेरा, आक्रमणकारी, बाहर से आकर गांव की शांति भंग करता है, लूटमार करता है तो उसका सामना जाट ही करता है। गांव में कोई जंगली जावनर आ घुसे और जान–माल की हानि की आशंका पैदा कर दें तो उसे गांव से खदेड़ बाहर करने की जिम्मेदारी भी जाट ही सम्भालता है। किसी के घर में सांप निकल आये तो उसे मारने के लिये भी जाट को ही बुलाया जाता है। अन्य बिरादरियों में कोई झगड़ा उत्पन्न हो जाये तो उसे सुलझााने के लिए भी जाट की ही पंचायत आगे आती है। एक प्रकार से गांव की प्रत्येक घटना या दुर्घटना एवं आफत का सामना करना सब जाट की जिम्मेदारियों में शामिल है।

समाज में अन्य जातियों का जाट के प्रति व्यवहार

ब्राह्मण अपने आपमें उच्च जाति होने का मिथ्या घंमड, अहं एवं अंहकार पाल कर सब पर अपने आदेश और अपनी स्वयं की बनाई परम्परा एवं मर्यादा लागू कर अपना रौब गालिब करता है या रखता है। हजारों साल से अन्य जातियों के साथ जाट भी ब्रह्मण की उच्चता की मान्यता को सहन करता चला आ रहा है। जाट लोक लिहाज के नाते ब्राह्मण को पोपलीला को छोड़कर, अन्य बातों में उसका आदर करता है। परन्तु ब्राह्मण जाट से इसी बात को लेकर नाराज है कि वह उसकी ढोंगी परम्परा को पूरी तरह कबूल क्यों नहीं करता। ब्राह्मण की नाराजगी की जाट को भारी कीमत भी चुकानी पड़ती है। ब्राह्मण इस हिन्दुस्तानी समाज का बहुत बड़ा प्रचारक है। वह अपने प्रचार से, समाज में आई बड़ी से बड़ी लहर का भी रूख मोड़ देता है। उसके प्रचार की हिन्दुस्तानी समाज पर बहुत बड़ी छाप है। उसे झूठ को सच और सच को झूठ बनाने में महारत हासिल है और यही उसके करिश्में का जादू है जो समाज के सिर चढ़कर बोलता है। लेकिन जाट के सामने भी यह धर्म संकट है कि वह एक कर्मयोगी होकर केवल अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये एक अकर्मण्य ब्राह्मण के मिथ्या प्रचार से डरकर अपने सिद्धांतों से समझौता कर लो। जाट अपनी सुख–समशद्धि और प्रत्येक प्रकार के स्वार्थो को तो तिलांजलि दे सकता है परन्तु अपनी आत्मा पर पत्थर रखकर किसी भी प्रकार ढ़ोंग और पांखड को स्वीकार नहीं कर सकता। वह कांटे की तरह खटकता है जिस कारण ब्राह्मण जाट के विरूद्ध अनायास और अनर्गल प्रचार में अपनी सारी शक्ति जुटा देता है। समाज की अन्य जातियों को भी जाट के विरूद्ध भड़काने में, ब्राह्मण अपनी विशेष भूमिका अदा करता है। जाट, ब्राह्मण को दादा भी कहता है, पूज्य भी कहता है, पूरोहित जी कहकर उसका आदर भी करता है, अपने यहां शादी विवाहों तथा अन्य खुशी के अवसरों पर उसे आमंत्रित भी करता है परन्तु उसकी ज्योतिष एवं पोथी–पत्रों में विश्वास नहीं करता, उसके मन्दिरों में चढ़ावा नहीं चढ़ाता, तथा उसके मन्दिरों में रखी पत्थर की मूर्तियों के सामने सिर झुका कर उनकी धोक–पूजा भी नहीं करता। जाट की इस प्रकार की प्रवृत्ति ब्राह्मण के दिल को कचोटती है जिस कारण वह जाट को नीचा दिखने को कोई अवसर हाथ से नहीं जाने देता।

बदलाव के दौर में शिक्षक की नई भूमिका

& jfo 'kdj

'शिक्षक दिवस' अध्यापक के लिए सबसे अहम दिन होता है। शिक्षक का समाज में सबसे बड़ा स्थान है। गुरू, शिक्षक, आचार्य, अध्यापक या टीचर ये सभी शब्द एक ऐसे व्यक्ति को व्याख्यतित करते हैं, जो सभी को ज्ञान देता है, सिखाता है। इन्हीं शिक्षकों को मान–सम्मान, सर्वपल्ली राधाकृष्णन आदर तथा धन्यवाद देने के लिए एक दिन निर्धारित है, जो 5 सितंबर को **'शिक्षक दिवस'** के रूप में जाना जाता है। असल में डॉ. राधाकृष्ण ने शिक्षकीय आदर्श को न सिर्फ भारत में अपितु वैश्विक स्तर पर स्थापित किया तथा न सिर्फ शिक्षकीय पद की गरिमा बढ़ायी, बल्कि वे उच्च पदों पर रहते हुए भी शिक्षा के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते रहे। वे शिक्षा को सामाजिक बुराईयों का अंत करने के लिए एक महत्वपूर्ण जरिया मानते थे। अपने ज्ञान को दूसरों में बांटने की अद्भूत प्रतिभा उनमें निहित थी तथा उसी उत्कृष्ट कला के कारण वे एक आदर्श शिक्षक के रूप में विख्यात हुए। उनका मानना है कि शिक्षक वह नहीं जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन ठूंसे, बल्कि वास्तविक शिक्षक तो वह है जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करें।

वैश्विक शांति, समृद्धि एवं सौहार्द में शिक्षा का विशेष महत्व है। शिक्षा मानव के सर्वागीण विकास का मूल आधार है। प्राचीन काल से आज तक शिक्षा का प्रासंगिकता एवं महत्ता का मानव जीवन में विशेष महत्व है। शिक्षकों द्वारा प्रांरभ से ही पाठ्यक्रम के साथ ही जीवन मूल्यों की शिक्षा भी दी जाती है। शिक्षा हमें, विनम्रता, व्यवहार कुशलता और योग्यता प्रदान करती है। आज भी बहुत से शिक्षक शिक्षकिय आदर्शों पर चलकर मानव समाज की स्थापना में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहें हैं। गौरतलब है कि भारत में गुरू–शिष्य की प्राचीन समय से ही लंबी परंपरा रही है। गुरूओं की महिमा का वृत्तांत ग्रंथों में मिलता है। भारतीय संस्कृति में गुरू का ओहदा भगवान से भी ऊंचा माना गया है। प्राचीनकाल में राजकुमार भी गुरूकुल में ही जाकर शिक्षा ग्रहण करते थे ओर विद्यार्जन के साथ–साथ गुरू की सेवा भी करते थे। राम–विश्वामित्र, श्रीकृष्ण–संदीपनी, अर्जुन–द्रोणचार्य से लेकर चुद्रगुप्त मौर्य–चाणक्य एवं विवेकानंद–रामकृष्ण तक शिष्य गुरू की एक आदर्श एवं दीर्घ परम्परा रही है। श्री राम और लक्ष्मण ने महार्षि विश्वामित्र तो श्रीकृष्ण ने गुरू संदीपनी के आश्रम में रहकर शिक्षा ग्रहण की और उसी की बदौलत समाज को आततायियों से मुक्त कराया। गुरू के आश्रम से आरम्भ हुई कृष्ण–सुदामा की मित्रता उन मूल्यों की ही देन थी, जिसने उन्हें अमीरी–गरीबी की खाई मिटाकर एक ऐसे धरातल पर खड़ा किया, जिसकी नजीर आज भी दी जाती है। अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने तो अपने पुत्र की शिक्षिका को पत्र लिखकर अनुरोध किया था कि उनके बेटे की शिक्षा में उनका पद आड़े नहीं आना चाहिये।

वस्तुतः शिक्षक उस प्रकाश–स्तम्भ की भांति है, जो न सिर्फ लोगों को शिक्षा देता है बल्कि समाज में चरित्र और मूल्यों की भी स्थापना करता है। कहते हैं बच्चे की प्रथम शिक्षक मां होती है, पर औपचारिक शिक्षा उसे शिक्षक के माध्यम से ही मिलती है। शिक्षा एकांगी नही होती बल्कि व्यापक आयामों को समेटे होती है। डा. राधाकृष्ण ने शिक्षा को एक मिशन माना था और उनके मत में शिक्षक होने के व्यवसायीकरण के विरोधी डा. राधाकृष्ण विद्यालयों को ज्ञान के शोध केंद्र, संस्कृति के तीर्थ एवं स्वतंत्रता के संवाहक मानते थे।

असल में शिक्षक शिक्षा और विद्यार्थी के बीच एक सेतु का कार्य करता है और यदि यह सेतु ही कमजोर रहा तो समाज को खोखला होने में देरी नहीं लगेगी। वर्तमान हालात बहुत अच्छे नहीं हैं लेकिन आज भी इस पद को गरिमापूर्ण और सम्मानीय माना जाता हैं। ट्यूशन आदि के रूप में आज तमाम शिक्षक अपने ज्ञान की बोली लगाने लगे हैं। किंतु कुछ ऐसे गुरू भी हैं, जिन्होंनें हमेशा समाज के सामने एक अनुकरणीय उदाहरण पेश किया है। ऐसे में जरूरत है कि गुरू और शिष्य दोनों ही इस पवित्र संबंध की मर्यादा की रक्षा के लिए आगे आयें ताकि इस सुदीर्घ परंपरा को सांस्कारिक रूप को वह सम्मान मिलना चाहिये, जिसके वे हकदार हैं।

रिश्वत युग : बधाई हो। कलियुग समाप्त हो गया और रिश्वत युग आ गया है। सतयुग सबसे अच्छा था जिसमें सब खुश थे। त्रेता में थोड़ा बदलाव आया लेकिन तब भी धर्मधीरा था। द्वापर युग से इंसानियत में गिरावट आनी शुरू हो गई थी लेकिन तब भी जीत धर्म की हुई थी। इसके बाद कलियुग आया। कलियुग जैसा चल रहा था वह आपको पता ही है लेकिन अब तो लगता है कि कलियुग भी खत्म हो गया और रिश्वत युग शुरू हो गया। तभी एक ही दिन में एक अफसर, एक थानेदार और दलाल रिश्वत लेते पकड़े गए। वाह क्या बात है। प्रतिदिन रिश्वती पकड़े जा रहे हैं लेकिन फिर भी वे नहीं डर रहे हैं। क्यों डरें? अब तो साफ हो गया है कि अगर आप रिश्वत लेते पकड़े जाते हैं तो रिश्वत देकर छूट भी सकते है। और ज्यादातर छूट ही रहें हैं। रिश्वत का दूसरा नाम भ्रष्टाचार। सरकारी महकमों में आज कल तीन तरह की रिश्वत चल रही है। एक जायज रिश्वत, दूसरी नाजायज रिश्वत और तीसरी गला घोंटू रिश्वत यानी एक रिश्वत जो आपका सरकारी टेंडरों की एवज में देनी ही देनी है। ठेकेदार पहले से ही अपने धंधे में इसका प्रॉविजन लेकर चलता है। यह दस से पद्रंह प्रतिशत तक होती है। इसे व्यापारी या व्यवसायी यूं समझता है जैसे वो गायों को चारा डाल रहा है। इस रिश्वत को देने से उसका दिल नहीं दुखता। लेकिन यह न समझिए कि यह रिश्वत वह अपनी जेब से दे रहा है। नहीं, वह इस जायज रिश्वत को सरकारी खजाने से ही वसूलता है। दूसरी कहलाती है नाजायज रिश्वत। पंद्रह प्रतिशत से ज्यादा दी जाने वाली रिश्वत नाजायज है। यह देने के बाद व्यवसायी कहता है– अजी कुत्तों को टुकड़ा डाल दिया जिससे वे भौंके और काटे नही। और तीसरी है गला घोंटू रिश्वत। इसमें रिश्वतखोर ठेकेदार की छाती पर सवार होकर उसका खून पीने लगता है और ठेकेदार भ्रष्टाचार निरोधक विभाग में जाकर घंटी बजाता है। हम तो अपने नरेंद्र मोदी से यही कहना चाहते हैं– मोदी भाई, तुम बस एक काम कर दो। इस देश से रिश्वत खत्म कर दो। कसम से जब तक जियो तब तक प्रधानमंत्री बने रहना। कम से कम इस देश को रिश्वत युग से छूटकारा तो मिले लेकिन क्या यह उनके बस की बात हैं?

पुरूषार्थ उसी में है, जो संकट की घड़ी में निर्णय लेने में कोई संकोच नहीं करता। – वेदव्यास

जाट जाति का विश्वव्यापी स्वरूप (भाग–1)

&Mk- /keZpUn fo|kyadkj

जिस जाति की उत्पत्ति जिस स्थान से होती है उसके बीज–बिन्दु उधर ही कहीं बिखरे हुए रहते हैं। जैसे कि आर्यों का उद्गम स्थल प्रायः मध्य एशिया और दक्षिणी रूस अथवा वक्षुपारीय प्रदेश को ही माना जाता है। इसी प्रकार से आर्यों की एक महानतम् शाखाः जाट जाति का उत्पत्ति स्थल हमें वहीं कही तलाशना होगा। भले ही यह जाति आजकल अनेक नाम व रूपों के साथ विश्वभर में फैली हुई है। यथा, इसका चीनी नाम यदि यूची अथवा किसान है तो जर्मनी में गेटे और गुटा है तो कहीं पर यूरोप में गाथ और गीते है तो हालैंड आदि जैसे देशों में जुटस है। फिर इस मूल वंश की और भी बहुत–सी शाखाएं विश्वभर में फैली हैं। जैसे कि महाभारत के शाल्वों का विकृत रूप स्लाव रूस में बसती है, तो मद्र या मेड जैसी शाखा ईरान में निवास करती है। लांबा का विकृत रूप लेम्बार्डी उत्तरी इटली में है, तो वहीं पर वेनिस में गाथों की एक शाखा भनिस या वैनिस गाथ है। तो डैन्यूब नदी तटबंध पर आबाद आस्ट्रो गाथ शाखा बसती है। अतः आज हमें इस जाति के मूल उद्गम स्थल की और दोबारा लौटने की आवश्यकता हैं।

कर्नल टॉड जैसे राजस्थानी इतिहासकारों ने यह संकेत पहले ही दे दिया है कि वर्तमान भारत में जिन लोगों को हम जाट कहते हैं वही लोग रोमन गाथा हैं। यह सूत्रवाक्य बार–बार उस ओर फिर हमारा ध्यान अपने पुण्य प्रदेश की ओर खींच रहा है। अतः हम अखण्ड भारतवर्ष से लेकर दक्षिणी रूस और यूरोप तक में जाट जाति से सम्बन्धित उन स्थलों का संधान करेंगें, जहाँ पर कभी उसका निवास रहा है। इतिहास के कालखण्ड में जातियों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवजन और आव्रजन होता ही रहा है। जो जाति कल तक कहीं और स्थान पर बसती थी, ऐतिहासिक कारणों से वह और कहीं जाकर किसी अन्य नाम से भी बस सकती है।

vk;kZ dh fofo/k 'kk[kk,¡%

डॉ. देशराज महाभारत के आधार पर यादवों के वृष्णि और अन्धक कबीलों के जिस संघ से जाट की उत्पत्ति स्वीकारते हैं उस संघ के नाम पर एक नगर ज्ञाति नाम का रूस में आज भी मौजूद है। कृरूगान अथवा गुर्गन जैसी घाटाी भी कश्यप सागर के तट पर वहीं पर स्थित है, जिसको कितने ही इतिहासकार महाभारतीय योद्धाओं और आर्यों की मूल रंगस्थली मानते हैं। क्योंकि रूस के गुर्गन अथवा इसी कुरूगण तपें में आज से पाँच हजार वर्ष पुरानी समाधियाँ है तो वहीं पर स्टैपी (घास) का मैदान है, जिसमें आर्यों ने सर्वप्रथम घोड़े जैसे तीव्रगामी पशु को पालतू बनाया था। लोहे के हथियारों और अपने तेज घुड़सवारों के बल पर ही तो रूस कसाईटों अथवा आर्य क्षत्रियों ने विश्व भर में अपनी विजय बैजयन्ती फहराई थी। डॉ. सत्केतु विद्यालंकार ने अपने 'प्राचीन भारत' नामक इतिहास ग्रन्थ में यह उल्लेख किया है कि दक्षिणी रूस के इसी भूभाग से आर्यों के कसाईट (क्षत्रिय) कबीले ने ईरान पर आक्रमण करके उसे जीता था।

संभवतः उसी काल से उनकी विजय–गाथा सुमेर और बैबीलोन की ओर बढ़ गई थी। वहीं पर जाकर उन्होंने मितिन्नयों को जीतकर अपनी हत्ती अथवा खत्ती साम्राज्य स्थापित किया था, जिनके बीच ईसा पूर्व 1380 में होने वाली जलसन्धि के पूरातातविक अवशेष आज भी तुर्की के राष्ट्रीय संग्रहालय में संचित है। आर्यों की एक शाखा 1500 ईस्वी के आसपास अफगानिस्तान और ईरान की ओर दक्षिणी रूस से आई जो कि हंडों आर्यन कहलाती है तो दूसरी भारोपीय शाखा ईराक–तुर्की से हाकर जर्मनी–इटली और फ्रांस होते हुए स्पेन तक पश्चिम में पहुंचा। रूस और जर्मनी से ही आर्यों की गाथा या जूट, स्लाव, टयूटॉनिक, फ्रैंक और वेल्स जैसी शाखाएँ फ्रांस और स्पेन के मार्गसे इंग्लैंड और अमेरिका तक पंहुची। जहाँ पर उत्तर से आने के कारण उनकी एक शाखा नार्दन अथवा नारमन ही बन गई थी तो दूसरी सैक्सन थी। आर्यों के ऐंजल और नारमन तथा सैक्सन (शेखों जाट) जैसे कबीलों ने ही इंग्लैड और अमेरिका का आवासन किया था।

ewy vkokl dh igpku%

सर्वप्रथम हम इस विषय में आर्यों और जाटों के मूल उद्गम स्थान दक्षिणी रूस की ओर ही नजर डालना चाहेंगें। रूस में ही आर्यों के ईश्वर वाचक सम्बोधनः ओम् नाम की निर्दल नदी है तो वहीं पर जाटों जैसा पुण्य स्थान भी है जोकि आर्यों के साथ जाटों के अभिन्न सम्बन्धों का ही सूचक है। जाटों, अलस्कक अथावा वलक्ष (सफेद) नामक झील भी वहीं पर है, जिसका जल दूध जैसा सफेद और निर्मल है। सीर–दरिया ही पौराणिक क्षीर–सागर हो सकता है। जितकूट नामक वहीं के एक नगर से चित्रकूट की ध्वनि निकलती है। सोवियतः संघ या रूस के विखण्डन के पश्चात जो अलग देश यूक्रेन बना है, वहां पर भी जाटवीरों के गौरवशाली नाम को धारण करने वाली जिटकान जैसी निर्मल नीर वाली नदी है। यही नही, एक जटपाल अथवा जटवाल नामक नदी वहां पर और भी बहती है। इसी प्रकार से बेलारूस में भी जटस्त नामक नदी है। सोवियत संघ में ओविच प्रत्यय लगाकर जो नामकरण करने की प्रक्रिया पनपी थी, उसका प्रभाव व्यक्तियों पर तो पड़ा ही था स्थान भी उस प्रबल प्रभाव से अछूते नहीं रहे थे। अतएव जटकी नामक बेलारूस की एक नदी का नाम ही जटकोविच रखा छोड़ा गया था।

नदियों के साथ ही साथ हम सोवियत संघ के पुराने देशों में जरटरें से सम्बन्धित दूसरे नगरों का भी अनुसंधान कर सकते हैं। यथा गटचीना नामक रूस का नगर वहाँ पर जाटों के चीन से बिगड़कर चीमा जैसा गोत्र या कुलनाम पाकिस्तानी और भारतीय पंजाबी जाटों में बहुत पाया जाता है। इसी प्रकार से

सुरगट जैसा नगर भी अपने नाम में जाट जाति को चिपकाये हुए है। यह शब्द शुरा जट ही संस्कृत का हो सकता है, जिसका अर्थ शुरा नामक जाट कबीले द्वारा आबाद किया हुआ शहर ही हो सकता है; जैसाकि पाकिस्तानी सिन्ध में मन्शूरा नामक स्थान है जोकि हमें मंडशूरा का ही विकार प्रतीत होता है। जिसको कभी ईरानी मन्द नदी वासी मंड़ लोगों (जाटों) ने ही बसाया होगा। आजकल मन्सुरा ही अंगेजी के प्रभाव से मन्सेरा बोला जाता है।

i:tkc rk tkVk dk ?kj g%

आर्यों की जो शाखा वक्षु नदी पार करके रूस से बैक्ट्रीया (उत्तरी अफगानिस्तान) के मार्ग से भारतीय उपमहाद्वीप में प्रविष्ट हुई थी, वहीं ईरान में जाकर बस गई थी। ईरान के वर्तमान सुलेमानिया प्रदेश का ही पूर्व नाम गुटीयम् अथवा गौड़ीयम् प्रदेश है जोकि गौड ब्राह्मणों और गकार का नकार होने से भारतीय जाटों का प्रचीन आवास रहा है। दक्षिणी ईरान के सिस्तान प्रदेश की सीमाएँ अविभक्त भारत के बिलोचिस्तान से मिलती है जिसका पुरातन नाम शिवस्तान है सीस्तान उसी का विकृत रूप है। यहीं पर कभी जाटों के शिव या शिरवी (तेवतिया) बसाति, बैस या बीसली और शाल्वक या साला से बिगड़कर बने हाला या हाल (अंग्रेज) जैसे कबीले निवास करते थे। यहीं पर शूरा शिविराशण (श्योराण) अथवा शिवखण्डे या शौकन्दे लोग बसते थे। शाल्वकों से बिगडकर बने हाला लोगों का हालाखण्डी पर्वत और प्रदेश वहाँ पर आज भी मौजूद है। यहीं पर उनकी हिंग्लाज देवी का मंदिर है, ऐसा जाट इतिहासकार ठाकूर देशराज मानते हैं।

पाणिनि से पंतजलि काल तक के इतिहास का अध्ययन करने से हमें यह ज्ञात होता है कि यदि आर्यजाटोकं का मद्र (मेड–सुनार) कबीला स्यालकोट से बहावलपुर तक फैले मद्र और कैकेय प्रदेश में निवास करता था तो उसके पश्चिम में स्थित झंग (उशीनर) प्रदेश के पीछे शाल्वक या हाला लोग बसते थे। सत्यावान इन्हीं का निर्वासित राजकुमार था तो सवित्री कैकेयी राज अश्वपति की ही पतिपारायणी पुत्री थी। उनके विवाह–सम्बन्ध से जो संतान पैदा हुई, वही सवित्री पुत्रकाः से बिगड़कर सौभूति कहलाई थी और कालान्तर में वही लोग पंजाब और हरियाणा में आजकल सिहौता यास सिमौता भी कहलाने लगे हैं। अतः पाकिस्तानी पंजाब व सिन्धु और ब्लोचिस्तान या शिवस्तान ही भारतवर्ष में जाटों के पुराने ठिकाने है। तभी वहीं पर अभी तक जटोई या जतोई, जटी और डेरा जाट जैसे स्थान मिलते हैं। कराची में आज भी उनका गाथ (रोमन नाम) गोलीमार जिला मौजूद है तो गोथ इब्राहिम जैसा नगर भी उनके नाम से है। गाथा शेरशाी नगर तो शेरशाह सूरी करे गाथ या जाट ही सिद्ध करता है। श्रीमती सोनीया गांधी भी इटली वेनिस के इसी गाथ कबीले से सम्बन्धित हो सकती है। क्वात्तरे के साथ औची प्रत्यय लगने से ही क्वात्रोची जैसा कुलनाम संभव है।

tkVk dk mRçokl %

यह सिद्ध होने पर कि जाटों की विजय–यात्रा दक्षिणी रूस से चलकर ईरान (गुटीयम्) और बैक्ट्रिया के मार्ग से भारतीय उपमहाद्वीप के गांधार प्रदेश (पेशावर) की ओर अग्रसर हुई है। तो दूसरी ओर वह ईरान से इराक होकर तुर्की या टर्की की ओर उन्मुख हुई है। वहाँ का जिट्टन सुलेमान नगर यही सूचना हमें देता है। यही नहीं, वहाँ का बाला प्रान्त बल जाटों द्वारा आवासित प्रतीत होता है। बल्कि डॉ. अतल सिंह खोखर जैसे भूगोलवेत्ता तो बिट्रनिका ऑफ इण्डिका की साक्षी के आधार पर तुर्की के बाला प्रान्त को ही पुरातन सिन्ध या सिंधु देश माना है। यदि हम उनकी इस स्थापना को स्वीकार कर लेते हैं तो विश्व में आर्यों के विस्तार की सारी समस्या ही सुलझ सकती है। क्योंकि तुर्की (अनातोलिया) ही भूमध्य में स्थित है, वहीं पर भूमध्य सागर स्थित है, जिससे एशिया से यूरोप और अफ्रिका (उत्तरी मिश्र–मैक्सिको) जैसे द्वीपों से सम्बन्ध स्थापित होता था। अतः आजकल टर्की को ही लघुएशिया अथवा एशिया माईनर कहा जाता है।

इसके पास स्थिति इस्रायल व फिलस्तीन नामक देशों में जाटा और जूटिया जैसे स्थल हैं जोकि इसाईयों के पवित्र धर्मस्थान हैं। इस्रायल में ही गोटा, जितान, गाजिट और गट या जट जैसे स्थान या नगर मौजूद हैं। इसके अलावा अरब जगत में स्थित जार्डन में जिता और वरिजट जैसे नगर नाम है। वहीं पर जाटड़ा नामक नाला भी बहता है। अरब के ही मुख्य एक देश सीरिया में एस विट (शिवत्य) जाट जैसा नगर है। साउदी अरब में भी जेटा नामक स्थान है तो इसी नाम का एक नाला भी है। जाटबास पर्वत भी है। ईरान में भी जाटाली प्रदेश जाटों के नाम पर आबाद है तो वाण जैसी नदी वहीं पर बहती है जोकि पौराणिक वाणासुर के ही निर्वासित वंशजों के ही नाम पर हो सकती है। क्योंकि बाणासुर के ही निर्वासित वंशजों के ही नाम पर हो सकती है। क्योंकि बाणासुर की पौत्री उषा और श्रीकृष्ण के पौत्र अनिरूद्ध के विवाह सम्बन्धी विवाद के पश्चात यादवों ने बाणपुर (ब्याणा) भरतपुर से उनको बाहर कर दिया था; ऐसा वर्णन पौराणिक इतिवृत्त में मिलता है। मन्द और मुण्डेर मदरेना, मदरेना, मेहरिया जैसे जाटों की मूल नदी मंड या मन्द भी वही पर प्रभावित है। हो सकता है कि मन्द से ही बिगडकर मोड या मोदी जैसे बनिया–व्यापारी भी उधर से ही चलकर भरतीय भू–भाग में आये होंगें। वे बैक्ट्रिया के बस्तारिया या व्यापारी भी हो ाकते हैं। वैसे वे लोग मूलतः आरमेनियन और बहरीन निवासी ही थे।

;jksi; xkFk vFkok tkV x.k %

यूरोप के देशों में भी हमें जाटवीरों के पुण्य स्मारक मिलते हैं। जैसे कि मिश्र से संलग्न अफ्रीकीय देश मैक्सिकों में जट कैम्प नामक स्थान है। वहीं पर कभी जाटों की अजटेक या माया सभ्यता फली–फूली थी। मय जैसी मायवी महामानव वहीं पर निवास करता था, जिसने सर्वप्रथम नगर–नियोजन का स्थापत्य शिल्प प्रस्तुत किया था। मिश्र और फिलस्तीन तथा ईराक में ही सर्वप्रथम नगर नियोजन और कृषि–व्यवस्था केबीज बिन्दु मिलते हैं। मैक्सिकों में ही कोष्ट नामक जिले में कोली जाट जैसे नगर हैं। मिश्र के जिप्सी जट्टी ही हो सकते हैं, वहां के मिनोज ही भारतीय मनु वंशी मिन्हास (पंजाब जाट) और मून जैसे कुलनाम हो सकते हैं। डॉ. अतल सिंह खोखर ने तो ग्रीस को भी वैदिक जरित से बिगड़कर जरिक बने आर्य–जाटों की ही आवास–भूमि

कर्त्तव्य पालन ही चित की शांति का मूल्य मंत्र है। – प्रेमचन्द

बताया है। तो उसी जरित से जरिक से गरिक होकर वही ग्रीस से बना है तो कीट द्वीप को भी वे जाटों की बस्ती मानते हैं। इस विषय में उन का ग्रन्थ– 'जाटों की उत्पत्ति और विस्तार' देखा जा सकता है। जनीद (दक्षिण अफ्रिका) में जटे जैसा शहर है। और तो क्या धुर पूर्व में जापान में गोटी या गोथी जैसा बर्फीला द्वीप है। अफ्रिका में ही गाटाचल पर्वत है। बेल्जियम में जाटा नगर है तो ब्राजील में भी जाटव नगर मौजूद है। क्यूबा में जाट बावलिका (बावली) है। मैक्सिको के जट्आ कारू और कौरव जाट जैसे स्थान हमें कौरवों द्वारा पाण्डवों के विनाशार्थ निर्मित मायावी लाक्षागुह की याद दिलाते है। जापान में मोरी गोत्र जाटों का ही है तो वही स्पेन में यह मूर बन गया है।

इसी प्रकार से कनाड़ा में जटसामान (मान जाट) नगर है तो अन्टार्टिका द्वीप में एक जाट नामक बफ्रिलस पहाड़ है। डेनमार्क में स्थित जटलैंड या सोमेस द्वीप तो जाटों के वहां पर बसने की स्पष्ट साक्षी ही दे रहा है। वहाँ के धर्मग्रन्थ एड्डा में यह उल्लिखित है के ईसा से पाँचवी शताब्दी पूर्व यहाँ पर एडन या मर्करी बुध नामक व्यक्ति आया था, उसके वंशज और अनुयायी जिट्स कहलाते थे। उन्होंने ही द्वीप का आवसन किया था। रघुनन्द्रन शर्मा जैसे आर्यसमाजी पण्डित द्वारा रचित 'वैदिक सम्पति' जैसे ग्रन्थ में डेनमार्क को भारतीय जाटों द्वारा बसाया गया धेनमार्ग माना गया है। जबकि मार्क स्वीडन स्विस भाषा में प्रदेश को भी मानते हैं। इस प्रकार से जाट या गाथ जाति का विस्तार विश्व व्यापी है।

ukuk uke/kkjh tkV tux.k %

अब तक हमने केवल स्थानों में ही जाट जाति के विस्तार या प्रभाव का आंकलन किया है। आगे हम जातीय कुलनामों अथवा गोत्रों में भी उसके विश्वव्यसपी प्रबल प्रभाव की परीक्षा करना चाहेंगें। रोमन इतिहासज्ञ जानाहरस ने ईरान पर 358 ईस्वी में आक्रमण करने वाले लोगों को मस्सा जट्टी (अट्टी तक्षक) कहा है। कहीं पर मसाबरात उसी का भाषायी विकार है। इन्हीं लोगों से आक्रान्त होकर ईरान शक–सीथियन भारत के पश्चिमी भू–भागों, सौराष्ट्र और सिन्ध एवं मालवा से राजस्थान तक आये थे। मद्र देश का शाकाल देश अथवा स्यालकोट जैसा नाम उन्होंने ही दिया था। कुषाणों और गुप्तों ने उन्ही की शव–शिला पर अपना विशाल–साम्राज्य पेशावर (गांधार) गाथ प्रदेश से लेकर मथुरा और मगध तक कायम किया था। कर्नल टॉड तो सारे ही शकों को जट्टी तक्षे ही मानते हैं।

चीनी तुर्किस्तान से अफगानिस्तान में प्रविष्ट होने वाले यूची अथवा कुषाण जाटों (कस्बा) ने ही बाद में हूण नाम धारण करके पाँचवी–छठी शताब्दी में गांधार प्रदेश का नूतन नामकरण जुबलीस्तान अथ्झवा चोलिस्तान किया था। जोहिल अथवा जेवलिया जैसे गोत्र आज भी राजस्थानी जाटों में देखे जा सकते हैं। बीकानेर में तो जोयल नामक एक जाट बहुल क्षेत्र भी है। हूणों की एक शाखा स्वयं को अफगानिस्तान और पंजाब–गुजरावाला और गुजरात में पहुंचकर गूजर कहने लगी थी। इनको ठाकूर देशराज ने जाट ही माना है। उनका ऐसा मानने का कारण संभवतः यह रहा होगा क्योंकि शक, कुषाण और हूण अफगानिस्तान और भारत में चीनी तुर्किस्तान अथवा सिक्यांग प्रदेश से चलकर आये थे। वहीं पर तुर्किस्तान अथवा सिक्यांग प्रदेश से चलकर आये थे। वहीं पर मध्यएशिया में कूची, काश्गर और खोतान जैसे मरूस्थलीय नगर हैं। कूची से आगमन के कारण ही तुर्की अथवा तँवर जाटों का नामकरण कूचर से गूजर होना असंभव नहीं है। शकों का भी क्षयरात वंश आज जाटों में सहरावत, रावत और राव के रूप में देखा जा सकता है। महापंडित राहुल सांकृतायायन शकों, कुषाणों और हूणों को एक ही रक्त–वंश की ही जातीयाँ मानते हैं और वे उन्हें क्रमशः एक दूसरे का उत्तराधिकारी भी मानते हैं। शकों के उत्तराधिकारी यदि कुषाण (यूची–जेटी) थे तो इनके उत्तराधिकारी श्वेत हूण या हेफ्ताल थे। आजकल ये तीनों ही पुरातन कबीले विश्वभर में फैले हुए हैं। अतः उनके वंशज जाटों का विश्व व्यापी विस्तार भी स्वयं सिद्ध ही है।

शिवदास गुप्ता ने ^fon'kk e Hkkjrh; mifuo'k* नामक पुस्तक में लिखा है– ''जाटों ने तिब्बत, यूनान, अरब, ईरान, तुर्किस्तान, जर्मनी, साईबेरिया, स्कैंडनेशिया, इंग्लैंड, ग्रीक रोम व मिश्रादि देशों में कुशलतापूर्वक शासन किया और वहां का उत्पाद विकासशील बनाया था।''

lnHkZ lwph %

1. 'जाट इतिहास' : ठाकुर देशराज
2. 'प्राचीन भारत' : डॉ० सत्यकेतु विद्यालंकार
3. 'मध्य एशिया का इतिहास' : राहुत सांस्कृतायन
4. "The Ancient Rulers & Clans of Ancient India" : Dr. B.S. Dahya
5. 'क्षत्रियों का इतिहास' : राजपाल शास्त्री और परमेश्वर शर्मा
6. 'जाट महान्' : महेन्द्र कुमार शास्त्री
7. 'जाटों का नवीन इतिहास' : प्रो० उपेन्द्र नाथ शर्मा
8. 'जाट इतिहास' : रामलाल हाला
9. 'जाट इतिहास' : रामस्वरूप जून
10. "History of Aryan Rules in India, E.B. Habal" : Dr. B.S. Dahya
11. 'नया जाट इतिहास' : डॉ० धर्मचन्द्र विद्यालंकार
12. "Jats & Gujjars" : Sir A.H. Bingaly
13. 'वैदिक सम्पत्ति' : पं० रघुनन्दन शर्मा
14. 'जाट इतिहास : समकालीन संदर्भ' : श्री प्रताप सिंह शास्त्री
15. 'प्राचीन क्षत्रिय जातियों का पराक्रम' : श्री योगेन्द्र पाल शास्त्री
16. 'जाट रत्न पत्रिका', 'जाट सफरनामा' : सम्पादक जसवीर मलिक
17. "World History (1987)" : Jim Schaffays & March Kenjer.
18. "Birtish Documents & Historical Records & Refrences.

सज्जन पुरूष की वास्तविक परिभाषा यही है कि वह कभी किसी व्यक्ति को पीडित नहीं करता। – न्यू मैन

सफलता के नियम–सफलता से पहले अच्छा इंसान बनना जरूरी घर–परिवार में डाली जाती है बुनियाद

& çk- j.k [kroky

1 bIlkfu;r dk vFk le>uk t :jh % जिस प्रकार मिट्‌टी से कुम्हार बर्तन गढ़ता है, उसी प्रकार परिवार की बुनियादी शिक्षाएं इंसान को गढ़ती हैं, उसके अंदर इंसानियत का बीज रोपती है। जिस इंसान को जितना ज्यादा अच्छा इंसानियत का अर्थ समझ आता है वह उतना अच्छा इंसान अपने परिवार से ही प्राप्त करता है।

2- dHkh [kq'kh] dHkh xe % जिंदगी से हम कई स्तरों पर जूझते हैं। कभी खुशी मिलती है तो कभी गम, लेकिन जिंदगी फिर भी आगे बढ़ती रहती है। इंसान पूरी कोशिश करता है कि वह कैसे भी करे लेकिन जूझता रहे। लेकिन बात तब बनती है जब इस जिंदगी की उठापटक से सीख लेकर आप एक मजबूत इंसान के रूप में उठने का माद्‌दा रखते है। अपने दुख पर रोते नहीं रहते। अगर आप जिंदगी में अपने दुख को ही बांचते रहेंगें तो कभी परेशानियों से नहीं लड़ पाएंगे।

3- er pwdks ekSdk % हर इंसान की जिंदगी में बार–बार मौके आते हैं जब वह अपनी तकदीर बदल सकता है। आपको चाहिए कि आप सतर्क रहें और उस मौके को पहचानें, उसे हाथ से न जाने दें। यह मौका आपकों तभी दिखाई देगा जब आप अपने कार्यक्षेत्र में अलर्ट रहेंगे। क्यों हो रहा है, क्या चल रहा है, इसकी जानकारी आपको होनी चाहिए। एक मौका हाथ से निकलने के बाद कोई जरूरी नहीं कि तुरंत आपको दूसरा मौका मिल जाए लेकिन हो भी सकता है कि मिल जाए। इसलिए हमेशा अच्छे मौके की ताक में रहें।

4- ,d&,d dne vkxs c<k,a % जिंदगी में कोई जरूरी नहीं की आप जल्दी ही सफल हो जाएं। अगर आपकी किस्मत अच्छी है तो आपको पहला ब्रेक बहुत अच्छा मिल जाए लेकिन यह भी उतना ही सच है कि चाहे एक–एक कदम बढ़ाकर ही सफलता मिल रही हो तो भी अपने कदम बढ़ाते रहें। ऐसा नहीं होना चाहिए कि बड़ी सफलताओं और मौकों को नजरअंदाज करते रहें, क्योंकि यही छोटी–छोटी सफलताएं एक बड़ी सफलता की बुनियाद भी होती है। दूसरी बात यह है कि जब आप इन छोटी–छोटी सफलताओं को एक साथ देखते हैं तो आप पाते हैं कि आपने सफलताओं की झड़ी लगा दी।

5- lrr esgur t :jh % बेशक यह सच है कि जिंदगी में हर इंसान मेहनत करता है और हर इंसान सफल भी नहीं होता। लेकिन इसके बावजूद हर इंसान को चाहिए कि वह अपने जीवन में खूब मेहनत करे। चूंकि सफलता केवल एक ही चीज से आपको नहीं मिलती। यह कई चीजों के कॉम्बिनेशन से बनती है, जिसमें बुनियादी शर्म मेहनत है। फिर आपकी किस्मत भी।

6- Kku ij[rk gks % जिस प्रकार सफलता की बुनियादी शर्त मेहनत है उसी प्रकार ज्ञान की पिपसा भी आपके अन्दर होनी चाहिए। अपने अंदर बचपन से ही रीडिंग हैब्टि पैदा करें। कुछ न कुछ पढ़ते रहें। इससे आपका ज्ञान और पुख्ता होता जाएगा। जब आप दूसरों से थोड़ा सा अलग हैं। बाकि लोगों से ज्यादा आप जानते हैं। लोग आपको सुनेंगे चूंकि आप वह बोल रहे होंगे जो दूसरों को नहीं मालूम।

7- fny dh ctk; fnekx ls ys dke % मैंने अपने जीवन में जो भी फैसले लिए वे दिमाग से ज्यादा लिए, दिल से कम। जब हम सोचते हैं तो कई चीजों को ध्यान में रखकर सोचते हैं। कई पहलुओं पर विचार करते हुए सोचते हैं लेकिन दिल कई बार भावुक भी हो जाता है। कई बार दिल व्यवहारिक निर्णय नहीं ले पाता।

8- eu dk dke fd;k % अपने लिए मैंने जो रास्ता चुना वह मेरे मन का काम था। निर्णय बेशक दिमाग से लेने चाहिए लेकिन काम वे करने चाहिएं जो आपको आनन्द की अनुभूति कराएं। एक्टिंग मेरा शौक रहा था। मैं थियेटर प्रेमी हूं। कई लोग कहते हैं कि तुमने थियेटर के लिए जिदंगी में बड़े–बड़े ऑफर ठुकरा दिये। तुम मुंबई नहीं गए जबकि तुम्हें कई बुलावे आए। मैंने कहा कि वहां जाकर मैं क्या कर लेता। सिर्फ पैसे ज्यादा कमाता। लेकिन दिल्ली में रहकर थियेटर करके मुझे मिला वह पैसे भी न दे पाते। और मैं दिल से बोल रहा हूं कि मुंबई न जाने के फैसले को मैं पूरी तरह से अपना सही निर्णय मानता हूं। मैं पूरी तरह से अपना सही निर्णय मानता हूं। मैं एक्टर बनना चाहता था। मैं एक्टर हूं। मैंने अपने करियर को व्यावसायिक सोच को लेकर आगे नहीं बढ़ाया। इसलिए खुद और सतुंष्ट हूं और सच में थियेटर को इज्वॉय कर रहा हूं।

9- t :jh gS f'k{kk % मैंने कई लोगों को देखा है, वे कहते हैं कि पढ़ने से क्या होगा। आजकल तो पैसे का बोलबाला है। थोड़ी–बहुत पढ़ाई के बाद भी कमाना तो पैसा ही है। लेकिन मैं जिंदगी मे शिक्षा को बहुत ज्यादा महत्व देता हूं। जिदंगी में शिक्षा ही दिमाग के द्वार खोलती है। संकीर्ण सोच दूर करती है। इंसान को प्रगतिशील बनाती है। न जाने कितने ही ऐसे दरवाजे खोलकर रख देती है जो आपके जीवन में स्वच्छ हवा का संचार करते हैं। इन्हें शिक्षित होकर ही महसूस किया जा सकता है। इसलिए खूब शिक्षा ग्रहण करें।

10- lcls igys cus vPNk bIlku % हर इंसान चाहता है कि वह एक सफल इंसान बनें। तमाम कोशिश भी करता है लेकिन मैं मानता हूं कि इस समय हमारे समाज में जो गड़बड़ चल रही है, वह यह है कि समाज में सफल लोग तो बहुत हो गए लेकिन अच्छे इंसानों की बहुत कमी हो गई है। इसलिए देश में इतना भ्रष्टाचार है और अनेकों बुराईयां व्याप्त हो गई हैं। इसलिए किसी भी इंसान को पहले एक अच्छा इंसान बनने की कोशिश करनी चाहिए। उसके बाद सफल इंसान बनने की। यह हमारे समाज और देश के लिए जरूरी है।

औरत वफा और त्याग की मूर्ति है, जो अपनी मेजबानी से, अपने को विल्कुल मिटा कर पति की आत्मा में एक अंगबन जाती है। – प्रेमचन्द

व्यक्तित्व विकास है सफलता की कुंजी

& Mk- lt ; flg

सफलता एक ऐसा शब्द है, जो हर कोई प्राप्त करना चाहता है, लेकिन उसे कैसे प्राप्त किया जाए, यह बहुत कम लोग जानते हैं। दरअसल जो लोग सफलता प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें यह पतानहीं होता कि व्यक्तित्व के विकास में ही ऐसी बहुत सारी खूबियां छुपी होती हैं, जिन्हें सुधार लेने मात्र से ही आप कई सारी असफलताओं को सफलता में बदल सकते हैं।

व्यक्तित्व को कैसे निखारा जाए, यह जानने से पूर्व यहां यह भी जान लेना उचित होगा कि व्यक्तितत्व होता क्या है। 'व्यक्तित्व व्यक्ति की उस संपूर्ण छवि का नाम होता है, जो वह दूसरों के सामने बनाता है।'

यदि आपकी छवि सकारात्मक होती है तो आप दूसरे के सामने प्रंशसा के पात्र बन जाते हैं। दूसरी तरफ यदि आपकी छवि नकारात्मक होती है तो आप अपमान के पात्र बन सकते हैं। किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व उस व्यक्ति के केवल एक गुण के कारण नहीं बनता, बल्कि इसमें उस व्यक्ति की संपूर्ण छवियां जैसे –ज्ञान, अभिव्यक्ति, सहनशीलता, गंभीरता, प्रस्तुतीकरण आदि विद्यमान होती हैं, जिससे वह सर्वगुण संपन्न और परिपूर्ण बनता है। व्यक्तित्व भी ऐसे ही कईं गुणों के समन्वय से बनता है, जिसके विभिन्न पहलू निम्नानुसार हैं–

lno viu vkj nlj d ckj e ldkjkRed lkp j[k

सकारात्मक सोच के बारे में सदैव यह बात कही जाती है, 'जो आप सोचते हैं, वही बोलते हैं। और जो आप बोलते हैं, वही आप करते हैं।' मतलब यदि आप सदैव उच्च और साकारात्मक विचार रखेंगें तो हमेशा सृजनातमक कार्य करेंगें, जिससे न सिर्फ आपको मानसिक संतुष्टि हासिल होगी, अपितु इससे आपके भीतर एक तरह का आत्मसम्मान भी पैदा होगा।

,d vPNk Jkrk vkj oDrk cu

भगवान ने यदि हमें दो कान और एक मुंह दिया है तो उसका मतलब यह है कि हम कम बोलें और ज्यादा सुने। अमिताभ बच्चन की सफलता का राज यही है कि वे अपने किसी भी कार्यक्रम में बोलते कम और सुनते ज्यादा हैं। इससे आपकी पहचान एक गंभीर और विचारवान व्यक्ति के रूप में बनती है।

दूसरी तरफ जब आप अधिक से अधिक लोगों के विचार सुनते हैं तो आपके पास बहुत–सी ऐसी सामग्री का संग्रह हो जाता है, जो आपके ज्ञान और समझ का परिमार्जित करता है।?

Kku dk foLrkj dj

हम अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी में ऐसे हजारों लोगों से मिलते हैं, जो आपके सामने अवसरों का खजाना खोल सकते हैं, बशर्ते कि आप उन्हें अपनी खूबियों को बताने में सक्षम हों। उदाहरण के लिए जब आप किसी व्यक्ति अथवा समूह से मिलते हैं तो उनसे बात करते समय यदि आप ऐसी छाप छोड़ते हैं, जो उन्हें प्रभावित करती हो तो आप उनके काम के व्यक्ति हो सकते हैं, क्योंकि आज की प्रोफेशनल जिन्दगी चापलूसी से नहीं, बल्कि उपलब्धियों से चलती है और कोई भी उपलब्धि बिना ज्ञाान के संभव नहीं हो सकती।

viuk vkdyu Lo; dj

मैनेजमेंट में एक सिद्धांत है, जिसे 'स्वाट' एनालिसिस के नाम से जाना जाता है। इस सिद्धांत के अनुसार अकसर वे लोग बाजार में अथवा अपने कार्यों में असफल होते हैं, जिन्होंने अपना आंकलन नहीं किया हुआ होता है अकसर उन्हें अपनी शक्ति का एहसास नहीं होता। स्वाट का पूरा मतलब यह हुआ कि जो व्यक्ति अपनी ताकत को पहचान कर अपनी कमजारियों को सुधारकर, अपने सामने आए किसी भी अवसर को नहीं छोड़ता, उसे कोई पराजित नहीं कर सकता।

viu drO;k vkj fl)kUrk d çfr vfMx jg

जानते हैं अब्राहम लिंकन की सफलता के पीछे सबसे बड़ा राज क्या था? वह था अपने कर्तव्यों और सिद्धांतों से कभी समझौता न करना। वे कई बार बीमार पड़े और जीवन के प्रारंभिक दिनों से ही 27 बार विभिन्न चुनावों में उन्हें पराजय का मुंह देखना पड़ा, लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी। अंततः एक दिन वे अमेरिका के राष्ट्रपति बने।

आज के कष्टों का सामना करने वालों के पास कल के कष्ट आते हुए झिझकते है। – अज्ञात

बिटियां के हाथ पीले कर दो

भूरचन्द जैन, बाडमेर

भारत में शादीशुदा महिलाओं की अपेक्षा कुवांरी कन्याओं, बालाओं, बच्चियों पर बलात्कार, अत्याचार, अनाचार, दुराचार, व्यभिचार, हत्या जैसे कई घिनौने कृत्य एवं उन पर अपमान करना आम बात हो गई हैं। जिसमें समाज का हर वर्ग, धर्म, सम्प्रदाय, जातियां बूरी तरह से प्रभावित एवं पीड़ित है। उसमें कोई समाज भी अछूता नहीं रहा है। समाज में से कुकृत्यों को बढ़ने से रोकने हेतु सभी को गहन चिन्तन के साथ कठोर प्रयास करने होंगे अन्यथा हमारे समाज की महिलाऐं – बालिकाएं कभी भी समाज के कंटकों एवं बलात्कारी भेंडियों से लूट सकता है। सरकार को महिलाओं की सुरक्षा के लिये कड़े कानून बनाने चाहिये वहां समाज को भी इस ओर सख्ती बरतने के लिये सामाजिक निर्णय लेने की पहल करनी होगी। इसके अतिरिक्त परिवार के लोगों को भी अपनी लाडली, प्यारी, दुलारी बिटियां के सियानी होते ही उसके हाथ पीले कर देने चाहियें ताकि जवानी की पगदंड़ी पर चढ़ती हुई वह अपने पति के साथ सुखी जीवन व्यतीत कर सके अन्यथा राह भटक कर दुराचारियों, बलात्कारियों की चुंगल में फंस कर अपने अमूल्य जीवन को नारकीय बना सकती है।

बिटिया के हाथ पीले करने के लिये परिवार – परिजनों को उसकी चढ़ती जवानी को ध्यान में रखते हुए जैसे ही वह सोलह वर्ष की हो जाये उसकी सगाई की चिन्ता ही नहीं करनी चाहियें अपितु तत्काल सगाई करते हुये जैसे ही वह 18 वर्ष की व्यसक जीवन में प्रवेश करें तो उसके तत्काल हाथ पीले कर देने चाहियें अर्थात उसे शादी के बंधन में बाध देना चाहियें। परन्तु आजकल सभी समाजों में परिवार की इस सम्बन्ध में घोर लापरवाही देखने को मिल रही है कि लाडली बिटिया 18 वर्ष की होने पर भी उसकी शादी की चिन्ता, फिक्र नहीं करते हैं। ऐसी स्थिति में उसकी जवानी की उम्र बढ़ने लगती है। परिणाम यह होता है कि वह बिना शादी के पथ भटक कर नाजायज सम्बन्ध कर बैठती है जो उसे काल के मुंह में धकेलने के सिवाय कोई रास्ता दिखाई नहीं देता। लोकलाज के कारण जवान लड़की या तो गर्भपात करवाकर कामवासना में डूब जावेगी या फिर आत्महत्या करके अपनी जीवन लीला समाप्त कर बैठेगी।

यदि आपकी लाडली बेटी की आपने सगाई कर दी है तो उसे तत्काल शादी के बंधनों में बांध देना चाहियें। लेकिन अक्सर ऐसा होता नहीं है और इस टीवी एवं मोबाईल युग ने उन्हें स्वच्छ बना दिया है। सगाई करने के बाद भी वह अपने होने वाले युवा पति के संग बेहिचक इधर–उधर मटर गश्ती करने लगती है। इतना ही नहीं अकेले में दोनों का घूमना, फिरना, उठना, बैठना, होंटलों में जाना, तीर्थों की यात्राा करना, तीज त्यौहारों का आनन्द लेते है ऐसी स्थिति में दोनों के शारीरिक सम्बन्ध बनने का सदैव खतरा मंडराता रहता है। यदि इस बीच सगाई सम्बन्ध विच्छेद हो जाये तो सोचियें आपकी प्यारी बच्ची का भविष्य क्या अंधकार से बच पायेगा। यह गंभीर एवं सोचनीय विषय है। ऐसी स्थिति में सामाजिक मर्यादाओं को ध्यान में रखते हुए सगाई के तत्काल बाद उसके हाथ पीले कर देने चाहिए।

महिलाओं को जब से पुरूषों के बराबर हक देने के लिये इसके लिये सहशस्त्रीकरण करने की पहल हुई है तब से महिलाओं ने प्रगति के नये से नये आयाम अवश्य खड़े किये है। यह हमारे लिये गौरव की बात है। लेकिन इस स्वतंत्रता का स्वच्छन्दता का रूप हमारी बेटियों ने धारण कर लिया है तब से इन पर अत्याचार, अनाचार, दुराचार, व्यभिचार, बलात्कार आदि बढ़ने लगे है। आजकल लड़कियों भी मोबाईल का दुरूपयोग करने लगी हुई है। फैशन ने उनकी लज्जा को छिन्न–भिन्न कर दिया है। वाहन चलाने के कारण स्वतंत्र घुमना उनके लिये खतरे को आमंत्रण करने लगा है। होटलों की चार दिवारी में लड़कों के साथ अमर्यादित व्यवहार एवं तामसी भोजन करने के कारण इनके राह भटकाने का खतरा मंडराने लगा है। उत्सव, महोत्सव, शादी समारोह आदि में गैर मर्दों के साथ हंसी ठिठोली करना इनके चरित्र को खंडित करने का खतरा बनने लगा है। जवानी के श्रणिक आनन्द में अपनी जाति बिरादरी को छोड़ अन्ययों के साथ अवैध सम्बन्ध बना कर भाग जाना जीवन लीला समाप्त करने को आमंत्रण करना होता जा रहा है। आधुनिक बढ़ते फैशन ने हमारी लाडली कन्याओं को अपनी ओर इतना आकर्षित कर दिया है कि उसे येन–केन प्रकार से प्राप्त करने के लिये वह उतावली व बावली हो जाती है। उस समय यदि कोई अप्रिय घटना कदाचित घट जाती है। तब हमारी प्यारी बेटी के जीवन को अंधकार में ढ़केलने को मजबूर करती है। इससे बचने के लिये बिटियां की चढ़ती जवानी का आभास होत ही उसके हाथ पीले कर देने चाहियें।

लड़की अठारह वर्ष की हो जाती है और परिजन परिवार वाले उसके हाथ पीले करने की बजाय उसे अपने जीवन को आगे बढ़ाने के लिये स्वतंत्र छोड़ देते है। यह कुछ मायने में अच्छी बात हो सकती है। लेकिन इस कारण उसकी शादी की उम्र दिनों दिन बढ़ाने के कारण उसकी जवानी नाजायज सम्बन्ध बनाने पर मजबूर करने लगती है। अक्सर करीब–करीब सभी समाजों में 18 से लेकर 30 वर्ष की लड़कियों शादी किये दिखाई देती है। क्या लड़कियों शादी योग्य होने पर भी शादी नहीं करके यदि हम भूल कर रहे है तो उसके पथ भ्रष्ट होने में आप स्वयं इसके लिये जिम्मेदार हैं। ऐसी स्थिति में लाडली बिटिया के हाथ शीघ्रताशीघ्र पीले करना ही एक मात्र समाधान है। कभी कभी शादी की उम्र होने और बढ़ती उम्र में लड़की शादी के लिये आना–कानी करती है तो उसकी दिनचर्या पर निगाह रखे यदि वह सही राह पर विकास की डगर पर आगे बढ़ती है तो ठीक अन्यथा उसे समाज के दरिन्दों से बचाने के लिये उसके तत्काल हाथ पीले कर देने में बुद्धिमता होगी।

आपकी प्यारी, दुलारी, लाडली बेटी अपने पांवों पर खड़े होकर सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, व्यावसायिक, समाज सेवा आदि में सेवा के साथ प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रही है तो उसमें आप बाधक नहीं बने। लेकिन जहां वह काम कर रही है बस इसका ध्यान रखना बहुत जरूरी है। यदि आपको लगे, शंका हो कि उसका चरित्र खंडित होने जा रहा है तो तत्काल उसके हाथ पीले करने की पहल करनी चाहिये यदि इससे चूक गये तो बिटिया की जिन्दगी सौंपट हो जावेगी और आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा दांव पर लग जावेगी।

अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति

पंचकुला, २३ मार्च, अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति तथा इंटरनैशनल जाट महान आर्गेनाईजेशन द्वारा शहीद-ए-आजम भगत सिंह के शहीदी दिवस पर सर छोटूराम जाट भवन सैक्टर ६ पंचकुला में एक भव्य समारोह का अयोजन किया गया और इस अवसर पर एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 150 व्यक्तियों ने अपना रक्तदान किया। कार्यक्रम में पधारने पर मुख्य अतिथि श्री बी०डी० ढालिया, डा० महेद्र सिंह मलिक पुलिस पुलिस प्रमुख हरियाणा व अन्य सभी मेहमानों का इंटरनैशनल जाट महान आर्गेनाईजेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजबीर रा%यान द्वारा स्वागत किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव, आई०ए०एस० (सेवा निवृत) श्री बी डी ढालिया ने संस्था की सराहना करते हुए कहा कि रक्तदान महादान है और शहीद भगत सिंह को इससे बेहतर श्रद्धांजलि शायद ही संभव होती। संघर्ष समिति के प्रधान एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महा निदेशक डा० एम०एस०मलिक आईपीएस (सेवा निवृत) ने कहा कि शहीद भगत सिंह भारत माता के सच्चे सपूत थे जिन्होने अपना सर्वस्व बलिदान कर राष्ट्र को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त करवाया था, ऐसे शहीदों की शहादत को सदैव नमन करना चाहिए। जो राष्ट्र शहीदों का सम्मान नहीं करते वे कभी प्रगति नहीं कर सकते।

डा०मलिक ने कहा कि भारतीय सेना विश्व की सबसे बड़ी सेना है लेकिन अभी तक शहीदों के सम्मान में भारत सरकार ने कोई सकारात्मक पग नहीं उठाया जबकि भारतीय सैनिक पाकिस्तान तथा चीन युद्धों के इलावा निरंतर छदम कार्यवाही झेल रहे हैं। उन्होने भारतीय सेना की प्रशंसा करते हुए कहा कि भारतीय सेना द्वारा पाकिस्तान के ९० हजार सैनिकों का आत्म समर्पण कराना विश्व के इतिहास में सदैव अंकित रहेगा और कहीं भी ऐसा कोई उदाहरण नहीं है इसके बावजूद सैनिकों, शहीदों और उनके आश्रितों को उचित सम्मान नहीं मिलता। यही कारण है कि आज सेना में १४ हजार से भी अधिक अधिकारियों की कमी है। प्रर्याप्त अभावों के बावजूद भारतीय सेना ने युद्ध तथा शांति में राष्ट्र पर आई किसी भी विपत्ती के समय अपनी भूमिका बखूबी निभाई है।

उन्होने सैनिकों के पुर्नवास की बजाहत करते हुए कहा कि सैनिक युवा अवस्था में सेवा निवृत हो जाता है और उस वक्त उसके उपर जिम्मेवारियों का बोझ सबसे अधिक होता है लेकिन केंद्रीय सरकार द्वारा उनके पुनः रोजगार की अभी तक कोई कारगर योजना नहीं बनाई है। उन्होने हुड्डा सैक्टरों एवं कालोनियों में सैनिकों के लिए ३ प्रतिशत प्लाट आरक्षित रखने के लिए कहा कि यह आरक्षण केवल ४ से ६ मरला तक ही उपलब्ध है जबकि सेवा निवृत होने वाले अधिकारी भी होते हैं उनके परिवार इन आवासों में अपने रूतबे के अनुरूप जीवन यापन नहीं कर सकते।

भूतपूर्व सैनिकों को केवल मैडीकल आधार पर पुलिस में भर्ती के पात्र बनाने की मांग की तथा साथ ही सरकार द्वारा शहीद स्मारक की भी बजाहत की। डा० मलिक ने सैनिक होस्टल हेतू पंचकुला में एक भू-भाग की मांग की जहां सैनिक तथा शहीदों के आश्रित ठहर कर प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं की तैयारी कर सकें। संघर्ष समिति इसके लिए उनकी मदद करेगी। सैनिक म्युजीयम की स्थापना के साथ-साथ पाठ्यक्रम में सामग्री डालने की भी मांग की ताकि नवयुवा उनसे प्ररेणा लेकर राष्ट्र भावना से ओत-प्रोत हो सकें। उन्होने कहा कि क्रिकेट खिलाड़ियों को मिलने वाले सम्मान की तुलना में सेना के प्रहरी शहीदों को मिलने वाला सम्मान ना के बराबर है।

कार्यक्रम के दौरान शहीद परिवार के आश्रितों व पूर्व लै०जनरलों व समाज के वरिष्ठ समाज सेवियों को शील्ड व शाल भेंज करके तथा रक्तदान करने वाले सभी बंधुओं को समिति की ओर से सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर शहीद भगत सिंह के भतीजे यादविंद्र संधु, शौर्य चक्र विजेता कर्नल मेहर सिंह दहिया, प्रसिद्ध समाज सेवी श्री बलराज कूंडू ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में लै०जनरल एस के कौशल, ब्रिगेडियर दीपक खुराना, प्रो० हरबंस सिंह, जाट मित्र मंडल दिल्ली के अध्यक्ष आजाद सिंह लाकड़ा, मास्टर देवराज नांदल भी उपस्थित थे। रक्तदान शिविर में रक्तदानियों का उत्साह देखते ही बनता था। कार्यक्रम में मुख्य रूप से पांच मांगें रखी गई जिनका सभी ने इनका स्वागत किया।

१- शहीद भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव को केंद्र सरकार शहीद का दर्जा दे।

२- १८५७ की क्रांति के शहीदों व शहीद भगत सिंह की शहादत की वीर गाथाएं सरकार पाठ्यक्रम में शामिल करे ताकि हमारी आने वाली पीढ़ी इन शहीदों की कुर्बानी समझ सके।

३- इन सभी शहीदों का शहीदी दिवस पर राष्ट्रीय व प्रदेश स्तर पर सरकारों को मनाना चाहिए।

४- १८५७ के शहीदों के नाम पर सरकार को इनके नाम संग्रहालय बनाने चाहिए।

५- गणतंत्र दिवस व १५ अगस्त के दिन इन शहीदों के परिवार के सदस्यों को सरकार को सम्मानित करना चाहिए।

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।